अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष-42, अंक- 22, 01-15 जुलाई, 2019

गीत और नृत्य गढ़ रहे प्रतिरोध!

नन्दराज पर्वत को बचाने के लिए बैलाडीला में चल रहा

आदिवासियों का सत्याग्रह

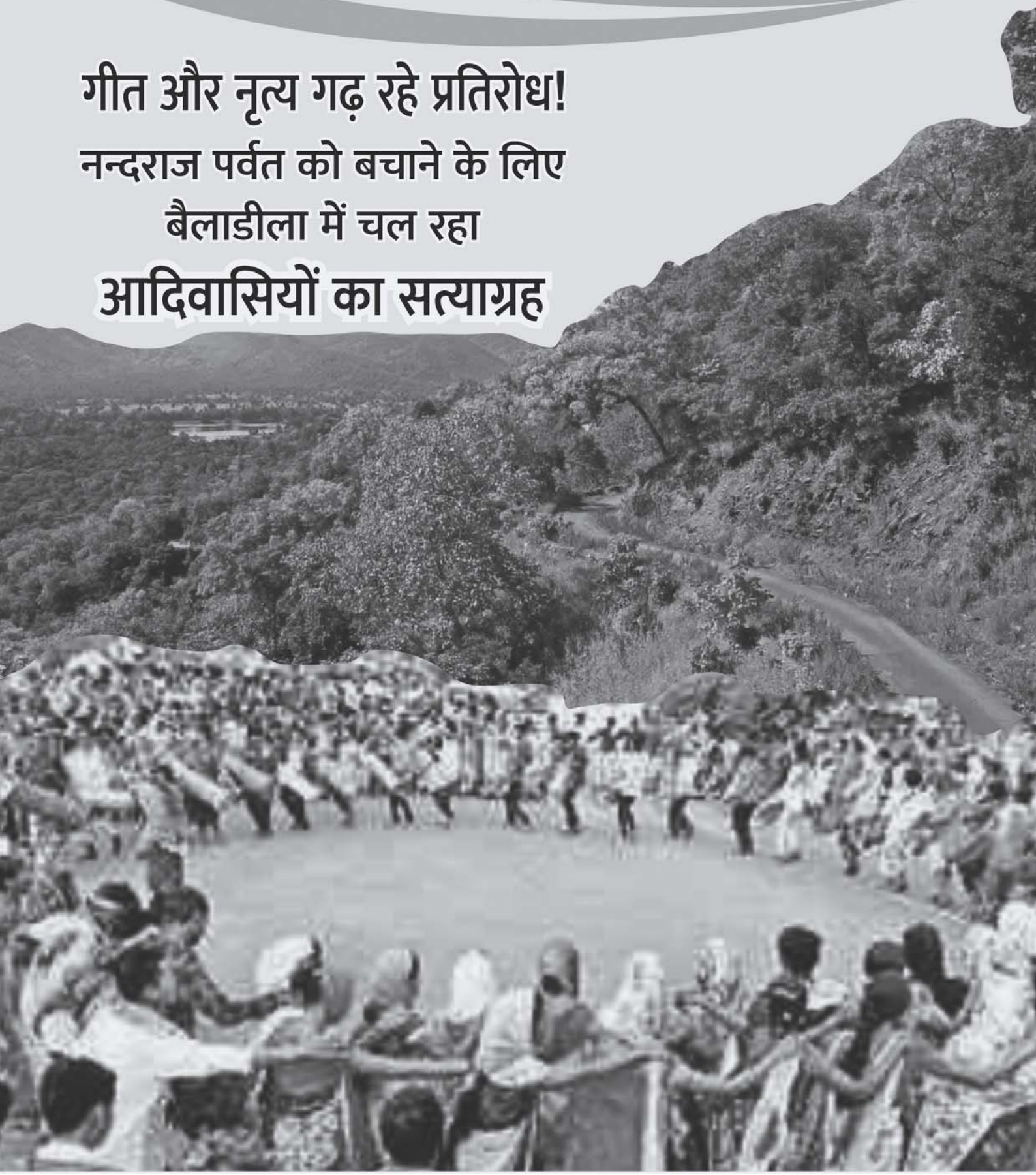

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 42, अंक : 22, 1-15 जुलाई 2019

अध्यक्ष
महादेव विद्रोही

संपादक
बिमल कुमार
सहसंपादक
प्रेम प्रकाश
09453219994
संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'
प्रो. सोमनाथ रोडे अरविन्द अंजुम,
रमेश ओझा अशोक मोती

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

एक प्रति	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC Code : UBIN0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. वे भारत के ईसा मसीह हैं! 3
3. गांधी हत्याकांड में सावरकर की थी... 4
4. गांधी को संग्रहालयों और पुस्तकालयों... 5
5. धारावाहिक - 'बा'... 6
6. अध्यक्ष की कलम से... 8
7. सत्तर साल पहले... 10
8. धर्मनिरपेक्षता, प्रजातांत्रिक समाज और... 11
9. ब्लड डायमंड के लिए ब्लड बाथ... 12
10. आवरण कथा... 13
11. जंगल के लुटेरों को ही मिली है... 14
12. दादा धर्माधिकारी... 15
13. यह मुसहरी सत्याग्रह का स्वर्ण जयंती... 17
14. गतिविधियां एवं समाचार... 18
15. कविताएं... 20

संपादकीय

लोकसत्ता निर्माण की रणनीति

लोक स्तर पर स्वराज्य की पुनर्स्थापना की शुरुआत दो स्तरों पर एक साथ करनी होगी। एक, व्यापक स्तर पर, क्योंकि जिन व्यवस्थाओं द्वारा लोक स्तर के स्वराज्य का अपहरण हो रहा है, वे राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर की हैं। दूसरे, लोक स्तर पर, जहां नव निर्माण का अधिष्ठान होगा।

व्यापक स्तर पर लोक की शक्ति लोक आंदोलन से प्रकट होगी। ऐसे व्यापक लोक आंदोलन में उन सभी आंदोलनकारी समूहों को शामिल होना चाहिए जो सत्ता को लोक में स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प हों। यह ध्यान में रखना होगा कि किसी भी व्यापक आंदोलन से कोई केन्द्रीकृत संगठन मजबूत न हो। आंदोलन से उपजी ऊर्जा एवं शक्ति से लोक स्तर पर शक्ति एवं ऊर्जा का संचार होना चाहिए। अर्थात् व्यापक आंदोलन की रणनीति में यह शामिल हो कि लोक स्तर की इकाई कैसे मजबूत हो। पुराने क्रांतिकारी संघर्षों से यह सबक लेना चाहिए कि क्रांतिकारी संघर्ष के बाद नेतृत्व की तानाशाही न स्थापित हो। व्यापक संघर्षों के दौरान ही लोक में उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना हो और कुरीतियों व अंधविश्वासों की समाप्ति हो। इसका मतलब यह हुआ कि न केवल राजनीतिक सत्ता के स्वरूप में परिवर्तन हो, बल्कि सामाजिक मूल्यों एवं संबंधों में भी बुनियादी परिवर्तन हो और वह आंदोलन के स्वरूप में रचा-बसा हो।

व्यापक स्तर के लोक आंदोलन का दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू, उसके जनाधार का है। इस शोषणकारी व्यवस्था में, उन समुदायों का शोषण हो रहा है जो जल, जंगल, जमीन, खनिज, पशुपालन आदि प्राकृतिक स्रोतों पर परंपरागत रूप से जीवन यापन कर रहे थे। इनके अलावा छोटे कारीगर एवं छोटे व्यवसायी भी इस व्यवस्था में शोषण के शिकार हैं। इन सभी समूहों को उनकी जीविका के स्रोतों से भी बेदखल किया जा रहा है। इसलिए, व्यापक स्तर के लोक आंदोलन का जन-आधार ये समूह होंगे। क्रांतिकारी समूहों को इन लोक समुदायों में लंबे समय तक काम कर अहिंसक क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार करनी होगी। जल, जंगल, जमीन, खनिज आदि प्राकृतिक संपदाओं के स्वामित्व के स्वरूप एवं इनके दोहन को देश की संप्रभुता के सवाल के साथ भी जोड़ना होगा। बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा इनके दोहन से देश की संप्रभुता का भी क्षरण हो रहा है। संप्रभुता के क्षरण का एक दूसरा पहलू यह भी है कि बीज, उर्वरक, कीटनाशक से लेकर खदानों से निकासी और खनिज प्रसंस्करण तक सभी क्षेत्रों में बहुराष्ट्रीय निगमों का नियंत्रण कायम हो रहा है। संप्रभुता के क्षरण के सवाल पर एक बड़ा जागरूक वर्ग भी इस व्यापक आंदोलन का हिस्सा बन जायेगा।

लोक स्तर पर स्वराज्य की पुनर्स्थापना का दूसरा पहलू लोक स्तर पर वैकल्पिक रचना का है। जहां-जहां जल, जंगल, जमीन, खनिज आदि प्राकृतिक जीवन आधारों पर परंपरागत समूह हैं, वहां-वहां सघन कार्य क्षेत्र बनाना होगा। इन सघन क्षेत्रों में स्वराज्य की भावना व संकल्प का प्रकटीकरण प्रबल होते जाना चाहिए। इसकी शुरुआत त्रिविध कार्यक्रम से हो सकती है। कम से कम एक क्षेत्र हो जहां राज्य के दखल से ये समूह स्वयं को स्वतंत्र कर लें। उस विषय में लोक सर्वसम्मति से निर्णय ले एवं स्वयं उसका क्रियान्वयन करे। यह क्षेत्र शिक्षा का हो सकता है, पानी का हो सकता है, खेती का हो सकता है या अन्य कोई भी, जिसमें लोक अपने को राज्य के दखल से स्वतंत्र कर सके। दूसरा कार्यक्रम बहुराष्ट्रीय निगमों के किसी एक उत्पाद के बहिष्कार का हो सकता है। सर्वसम्मति से कम से कम किसी एक ऐसे उत्पाद का सार्वजनिक बहिष्कार करें। तथा, तीसरा कार्यक्रम कम से कम एक क्षेत्र में स्वावलंबी बनने का होना चाहिए। यह कार्यक्रम ऐसा हो जिसमें स्थानीय प्राकृतिक स्रोत का उपयोग हो तथा पर्यावरण का संरक्षण हो। इसके साथ ही इन सघन क्षेत्रों में समाज का विभाजन करने वाली शक्तियों के विरुद्ध लोक की एकजुटता प्रकट हो। दूसरे कुरीतियों एवं अंधविश्वासों को समाज से दूर करने का अभियान भी इन सघन क्षेत्रों में चलना चाहिए। स्त्री शक्ति का प्रकटीकरण तथा नव निर्माण में उनकी बराबर की भागीदारी भी सुनिश्चित होनी चाहिए।

यह आंदोलन एक ही समय में लोक के स्वराज्य की स्थापना का भी है और राष्ट्रीय संप्रभुता के क्षरण को रोकने का भी है। अन्यथा, औपनिवेशिक काल में लोक की संप्रभुता का तो प्रत्यक्ष हनन हुआ, आज अगर परिस्थितियों को और बिगड़ने दिया गया तो राष्ट्र की संप्रभुता का क्षरण और अधिक होता ही जायेगा और हम आजाद देश के गुलाम नागरिक बन जायेंगे।

–बिमल कुमार

गांधी - 150

वे भारत के ईसा मसीह हैं!

❑ रोम्या रोलां

श्वेत रूस अकादमी के प्रोफेसर पी किरुचिन ने फ्रांसीसी दार्शनिक रोम्या रोलां को पत्र लिखकर गांधीजी के बारे में जानना चाहा। गांधीजी के बारे में उन्होंने काफी कुछ पढ़ सुन रखा था। वे जानते थे कि रोम्या गांधी के अनन्य प्रशंसक हैं। उन्होंने पत्र में पूछा कि मैंने सुना है, गांधी भारत में एक नये धर्म का प्रवर्तन करना चाह रहे हैं और भारतीय जनता की आंखों में धूल झोंक रहे हैं, उनके बारे में आपका क्या ख्याल है? रोम्या रोलां ने 27 दिसंबर 1932 को किरुचिन के पत्र का उत्तर भेजा। यह वही पत्र है। –सं.

गांधी के बारे में मेरे क्या विचार हैं, यह आप जानते हैं। जब से मैंने उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानने का सुयोग पाया है, सन् 1930 के दिसंबर में, स्विटजरलैंड भ्रमण के लिए आकर, जब वे पांच दिन मेरे यहां ठहरे थे, तब से मैंने अपने मत में कोई संशोधन करने की जरूरत नहीं समझी। उनके विरुद्ध उनके विरोधी लोग चाहे जो भी कहें, मनुष्य के रूप में उनका चरित्र सबके मन में श्रद्धा जगाकर रहेगा। विश्वास के प्रति उनकी बाध्यता और हार्दिकता तमाम संदेहों से परे है। अपने प्रति शायद वे गलती कर सकते हैं, लेकिन जान-बूझकर वे दूसरे को धोखा नहीं दे सकते। उनके बारे में विचार प्रकट करते समय इस चरम सत्य को हमेशा याद रखना चाहिए कि परिवर्तन की धारा के अनुसार वे पल-पल परिवर्तित होते रहते हैं। उनमें ऐसा कुछ नहीं है, जो बद्धमूल हो गया हो या हमेशा के लिए रुक गया हो। कुछ विषयों में उनकी जानकारी कम हो सकती है, और इसे स्वीकार कर लेने को वे हमेशा राजी रहते हैं, अपने को सुधार लेने अथवा अपने ज्ञान को पूर्ण कर लेने के लिए वे सदा प्रस्तुत रहते हैं—लेकिन ऐसा वे किताबें पढ़कर उतना नहीं करते, जितना अपने अनुभवसिद्ध सत्य के द्वारा करते हैं। अपने को शिक्षित करने के लिए वे सदा इसी रीति का अनुसरण करते हैं—समाज का सीधा परीक्षण-निरीक्षण करना, एक ही अभिज्ञता की पुनरावृत्ति करना, पग-पग पर विचार करना और अपनी परिधि को कुछ और विस्तृत करना। जाहिर है कि ऐसे परीक्षण-निरीक्षण के परिणामस्वरूप उनका चित्त परिवर्तित और परिमार्जित होगा ही। दृष्टांत के रूप में मैं इस बात का उल्लेख करूंगा कि 'ईश्वर सत्य है' उनका यह आदर्श मंत्र पिछले चार पांच वर्षों में रूपांतरित होकर 'सत्य ही ईश्वर है' बन गया है। और इसे आज वे अपना नीति-वाक्य मानते हैं। एक ही मंत्र का यह रद्दोबदल बहुत अधिक गुह्य और निगूढ़ है। यह रूपांतर बड़े गहरे अर्थ से भरा है, क्योंकि इससे अभिज्ञता के द्वारा नियंत्रित सत्य की समस्त उपलब्धियों का मूल्यांकन संभव होता है। इसके अलावा, यदि आपने उनकी आत्मकथा में मेरी भूमिका पढ़ी होगी तो आप देखेंगे कि गांधी स्वयं ही अपनी अभिज्ञताओं के आपेक्षिक और क्षणस्थाई चारित्रिक गुणों की बात बार-बार कहते हैं—'मेरी अभिज्ञता सामान्यतम अर्थों में भी संपूर्ण है, ऐसा दावा मैं किसी तरह नहीं कर सकता। ज्ञानी अपने ज्ञान का जो दावा कर सकते हैं, वही दावा मैं अपनी अभिज्ञता के बारे में कर सकता हूं—उससे तनिक भी ज्यादा नहीं।' अपने अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थ विश्लेषण के बाद भी वे अपने निर्णय को कभी अंतिम नहीं कहेंगे, बल्कि नयी-नयी संभावनाओं के लिए वे सदा अपने मन का दरवाजा खुला रखते हैं....

'—उनके साथ बातें करके मुझे ऐसा ही लगा है। वे विनयी और दृढ़ हैं, सामाजिक कार्यों के बारे में किसी भी अनुमान को हमेशा बड़े मनोयोग से जांचकर देखते हैं और उपलब्ध सत्य के आधार पर एक के बाद दूसरा परीक्षण करते चलते हैं—लेकिन वे दूसरी तरह के परीक्षणों अथवा अन्य अभिज्ञताओं को प्राप्त करने के लिए भी सदा तैयार रहते हैं और जांचकर उनको देख लेने के बाद, जरूरत होने पर, उन्हीं के आलोक में अपनी कर्मपद्धति बदलने को भी राजी रहते हैं। वे अपने जीवन को कभी सजा-संवार नहीं सके, लेकिन अगर वे दस बरस भी और बचे रहे तो सामाजिक क्षेत्र में उन्हें बहुत बड़े-बड़े काम करते देखा जायेगा—मेरी तो यही धारणा है। तब तक ब्रिटिश पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध उनका युद्ध समाप्त हो चुकेगा और भारतीय पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों के खिलाफ एक नये युद्ध में वे अपने देश की जनता को खड़ा करेंगे। उस समय इस तरह का परिवर्तन जिन्हें अप्रत्याशित जान पड़ेगा, मैं तो कहूंगा, उन्होंने गांधी को समझने की चेष्टा नहीं की है। इंग्लैंड के खिलाफ भारत का सम्मिलित मोर्चा कायम रहे, इसके लिए उनका वर्तमान रणकौशल दर्शनीय है—वे भविष्य में भारत के धनी संप्रदाय को किस दृष्टि से देखेंगे, इसका भी स्पष्ट आभास उन्होंने इसी बीच दे दिया है, धमकी देने से भी वे नहीं चूकते यहां तक कि लंदन के गोलमेज सम्मेलन में भी नहीं।

भारत का संग्राम केवल एक बहुत बड़े देश का ही संग्राम नहीं है। जो देश मानवता की महाभूमि है, जो हमारी यूरोपीय भाषाओं और विचारों का उत्स है, जहां युग-युगांतरों से हमारी जड़ें हैं, जिनकी कृपा से आज की यूरोपीय सभ्यता के शक्तिमान वृक्ष ने आकाश में मस्तक उठाया है, उसकी नियति में, उसके जागरण में, उसकी स्वाधीनता की कामना में हम लोगों का जो आग्रह है, वह केवल आत्मीयता के कारण नहीं है। इसलिए भी है कि उसकी ही प्रेरणा से आज कितने ही देश न्यायोचित विद्रोह के आवेग से कांपते हुए, माथा उठाकर जाग खड़े हुए हैं, अपनी नियति की पतवार वे अपने हाथों में लेना चाहते हैं, वे अपना अधिकार अर्जित करना चाहते हैं।

अन्यान्य देशों की अपेक्षा, मेरी दृष्टि में, भारत का यह जागरण अद्वितीय जान पड़ता है। यदि समस्त राजनैतिक आवेगों अथवा युक्तियों से अलग उसके लक्ष्य को हम समस्त मानव जाति का लक्ष्य समझते हैं, तो इसका कारण उसका वह अभीष्ट उतना नहीं है (जो एक महान देश के स्वाधिकार अर्जन का, अनेक जातियों के सम्मिलित राष्ट्र के रूप में उसकी स्थापना का है)। इसका कारण है वह मार्ग, जिसे अपने अभीष्ट-साधन के लिए उसने अपनाया है। इसका कारण है कर्मक्षेत्र में उसकी चेतना और व्रत का वह भाव, जो उसके नेता ने उसमें भरा है। इसका कारण है वह जनता, जिसने उस पवित्र व्यक्ति को अवतरित किया है—अहिंसा का महात्मा...! सत्याग्रह का ऋषि...! और वीर गांधी...! ❑

गांधी हत्याकांड में सावरकर की थी अहम भूमिका!

❑ शम्सुल इस्लाम

गांधीजी की हत्या की साजिश में शामिल लोगों की पहचान को लेकर पिछले दो-तीन सालों से लगातार भ्रम फैलाने की कोशिश की जा रही है. सुप्रीम कोर्ट ने भी अक्टूबर 2017 में गांधी की हत्या की जांच फिर से शुरू करने को लेकर दायर की गई एक याचिका को मंज़ूरी दी है. गांधी की हत्या के लिए नाथूराम गोडसे और नारायण आप्टे को 15 नवंबर 1949 को फांसी दी गई थी. गांधी की हत्या के मामले में सहअभियुक्त और नाथूराम के छोटे भाई गोपाल गोडसे को आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई थी.

गांधी की हत्या भारतीय राष्ट्रीयता के बारे में दो विचारधाराओं के बीच संघर्ष का परिणाम थी. गांधी का जुर्म यह था कि वे एक ऐसे आज़ाद भारत की कल्पना करते थे जो समावेशी होगा. जहाँ विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग बिना किसी भेदभाव के रहेंगे. दूसरी ओर, गांधी के हत्यारों ने हिन्दू राष्ट्रवादी संगठनों विशेषकर विनायक दामोदर सावरकर के नेतृत्व वाली हिन्दू महासभा में सक्रिय भूमिका निभाते हुए हिंदुत्व का पाठ पढ़ा था. हिन्दू अलगाववाद की इस वैचारिक धारा के अनुसार, केवल हिन्दू ही राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। हिंदुत्व विचारधारा के जनक सावरकर ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन 'हिंदुत्व' नामक ग्रन्थ में किया था.

भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करने वाली यह किताब अंग्रेज शासकों ने सावरकर को तब लिखने का अवसर दिया था, जब वे जेल में थे और उनपर किसी भी तरह की राजनीतिक गतिविधियां करने पर पाबंदी थी. इसको समझना ज़रा भी मुश्किल नहीं है कि अंग्रेज़ों ने उन्हें यह छूट क्यों दी थी? अंग्रेज गांधी के नेतृत्व में चल रहे साझे स्वतंत्रता आंदोलन के उभार से बहुत परेशान थे और ऐसे समय में सावरकर का हिन्दू-राष्ट्र का नारा अंग्रेजों के लिए आसमानी वरदान था. उन्होंने हिंदुत्व के सिद्धांत की व्याख्या शुरू करते हुए हिन्दुत्व और हिंदू धर्म में फ़र्क किया. लेकिन जब तक वे हिंदुत्व की परिभाषा पूरी करते, दोनों के बीच अंतर पूरी तरह से ग़ायब हो चुका था. अपना ग्रंथ समाप्त करते हुए सावरकर हिंदुत्व और हिंदूवाद के बीच के अंतर को पूरी तरह भूल गए. उनके मुताबिक, केवल हिंदू भारतीय राष्ट्र का अंग थे और हिंदू वे थे, जो सिंधु से सागर तक फैली हुई इस भूमि को अपनी पितृभूमि मानते हैं। वे रक्त संबंध की दृष्टि से उसी महान नस्ल के वंशज हैं जिसका प्रथम उद्भव वैदिक सप्त सिंधुओं में हुआ था, वे उत्तराधिकार की दृष्टि से अपने आपको उसी नस्ल का स्वीकार करते हैं और इस नस्ल को उस संस्कृति के रूप में मान्यता देते हैं जो संस्कृत भाषा में संचित है.

राष्ट्र की इस परिभाषा के चलते सावरकर का निष्कर्ष था कि ईसाई और मुसलमान समुदाय, जो ज्यादा संख्या में अभी हाल तक हिंदू थे और जो अभी अपनी पहली ही पीढ़ी में नए धर्म के अनुयायी बने हैं, भले ही हमसे साझा पितृभूमि का दावा करें और लगभग शुद्ध हिंदू खून और मूल का दावा करें, लेकिन उन्हें हिंदू के रूप में मान्यता नहीं दी जा सकती क्योंकि नया पंथ अपनाकर उन्होंने कुल मिलाकर हिंदू संस्कृति का होने का दावा खो दिया है. गांधी का सबसे बड़ा जुर्म यह था कि वे सावरकर की इस हिन्दू राष्ट्रवादी रथ-यात्रा के लिए सबसे बड़ा रोड़ा बन गए थे. गांधी की हत्या में शामिल मुजरिमों के बारे में आज चाहे जितनी भी भ्रांतियां फैलाई जा रही हों, लेकिन भारत के पहले गृहमंत्री सरदार पटेल का मत बहुत साफ़ था, जिनसे आजकल हिंदुत्ववादी टोली गहरा भाईचारा दिखाती है.

पटेल का मानना था कि आरएसएस, विशेषकर सावरकर और हिन्दू महासभा का इस जघन्य अपराध में सीधा हाथ था. उन्होंने हिन्दू महासभा के वरिष्ठ नेता श्यामा प्रसाद मुखर्जी को 18 जुलाई 1948 को लिखे खत में बिना किसी हिचक के लिखा कि हमें मिली रिपोर्टें इस बात की पुष्टि करती हैं कि आरएसएस की गतिविधियों के फलस्वरूप देश में ऐसा माहौल बना कि ऐसा बर्बर काण्ड संभव हो सका. मेरे दिमाग़ में कोई संदेह नहीं है कि हिंदू महासभा का अतिवादी धड़ा षडयंत्र में शामिल था. सरदार ने गांधी की हत्या के 8 महीने बाद 19 सितंबर 1948 को आरएसएस के मुखिया एमएस गोलवलकर को सख्त शब्दों में लिखा कि हिन्दुओं का संगठन बनाना, उनकी सहायता करना एक प्रश्न है पर उनकी मुसीबतों का बदला, निहत्थे व लाचार औरतों, बच्चों व आदमियों से लेना दूसरा प्रश्न है। सावरकर ने जनता में एक प्रकार की बेचैनी पैदा कर दी थी, उनकी सारी तक़रीरें सांप्रदायिक विष से भरी थीं.

हिन्दुओं में जोश पैदा करना व उनकी रक्षा के प्रबन्ध करने के लिए यह आवश्यक नहीं था कि वह ज़हर फैले. उस ज़हर का फल अन्त में यही हुआ कि गांधीजी की अमूल्य जान की कुर्बानी देश को सहनी पड़ी और सरकार व जनता की सहानुभूति ज़रा भी आरएसएस के साथ न रही, बल्कि उनके खिलाफ हो गई। उनकी मृत्यु पर आरएसएस वालों ने जो खुशी जताई और मिठाई बांटी, उससे यह विरोध और भी बढ़ गया और सरकार का इस हालत में आरएसएस के खिलाफ कार्रवाई करना जरूरी हो गया। यह सच है कि गांधी की हत्या मामले में सावरकर बरी कर दिए गए. गांधी हत्या केस में दिगंबर बागड़े के बयान—महात्मा गांधी की हत्या का षड्यंत्र रचने में सावरकर की महत्वपूर्ण भूमिका थी—के बावजूद वे इसलिए मुक्त कर दिए गए कि इन षड्यंत्रों को साबित करने के लिए कोई 'स्वतंत्र साक्ष्य' नहीं था.

क़ानून कहता है कि रचे गए षड्यंत्र को अदालत में सिद्ध करना हो तो इसकी पुष्टि स्वतंत्र गवाहों द्वारा की जानी चाहिए. निश्चित ही यह एक असंभव कार्य होता है कि बहुत ही गोपनीय ढंग से रची जा रही साजिशों का कोई 'स्वतंत्र साक्ष्य' उपलब्ध हो पाए. बहरहाल क़ानून यही था और गांधी की हत्या के केस में सावरकर सज़ा पाने से बच गए. हालांकि यह बात आज तक समझ से बाहर है कि निचली अदालत ने सावरकर को दोषमुक्त किया था, इस फ़ैसले के खिलाफ़ सरकार ने हाईकोर्ट में अपील क्यों नहीं की? सावरकर के गांधी की हत्या में शामिल होने के बारे में न्यायाधीश कपूर आयोग ने 1969 में अपनी रिपोर्ट में साफ़ लिखा कि वे इसमें शामिल थे, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. सावरकर का 26 फरवरी 1966 को देहांत हो चुका था. यह अलग बात है कि इस सबके बावजूद सावरकर की तस्वीरें महाराष्ट्र विधानसभा और भारतीय संसद की दीवारों पर सजाई गईं और देश के हुक्मरान पंक्तिबद्ध होकर इन तस्वीरों पर पुष्पांजलि अर्पित करते हैं. ❑

गांधी को संग्रहालयों और पुस्तकालयों से बाहर निकालने की ज़रूरत है

❑ रामदत्त त्रिपाठी

रामदत्त त्रिपाठी भारत में बीबीसी के संवाददाता रहे हैं और वरिष्ठ पत्रकार हैं। जेपी आंदोलन का प्रमुख कार्यकर्ता होने के नाते इमरजेंसी के दौर में वे जेल में भी बंद थे। चम्पारण सत्याग्रह के उपलक्ष्य में 10-11 अप्रैल 2017 को उन्होंने पटना में गांधीजनों के राष्ट्रीय समागम को सम्बोधित किया था। गांधीजनों के अलावा उनके श्रोताओं में समागम के मुख्य आयोजक और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी उपस्थित थे। प्रस्तुत है उनके सम्बोधन के महत्त्वपूर्ण संपादित अंश। –सं.

दुनिया में शांतिपूर्ण सह अस्तित्व हमेशा एक बड़ी चुनौती रहा है। गांधी जी एक मात्र ऐसे रहनुमा थे जिन्हें तीन महाद्वीपों एशिया, योरप और अफ्रीका में विभिन्न धर्मों और समुदायों के साथ मिलकर काम करने का प्रत्यक्ष अनुभव था। 'हिंद स्वराज' में उन्होंने लिखा है कि एक राष्ट्र होकर रहने वाले लोग एक दूसरे के धर्म में दखल नहीं देते है, अगर देते है तो समझना चाहिए कि वह एक राष्ट्र होने लायक नहीं है। अगर हिंदू मानें कि सारा हिंदुस्तान, सिर्फ हिंदुओं से भरा होना चाहिए, तो यह एक निरा सपना है। मुसलमान भी अगर ऐसा मानें कि उसमें सिर्फ मुसलमान ही रहें, तो उसे भी सपना ही समझिए। हिंदू और मुसलमान दोनों को समझाते हुए गांधी जी ने हिंद स्वराज में लिखा कि बहुतेरे हिंदुओं और मुसलमानों के बाप दादे एक थे, हमारे अंदर एक ही ख़ून है।क्या धर्म बदला इसलिए आपस में हम दुश्मन हो गए? धर्म तो एक ही जगह पहुँचने के अलग-अलग रास्ते है।

गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में गौ सेवा एक बड़ा कार्यक्रम था। हिंद स्वराज में उन्होंने कहा कि 'जैसे मैं गाय को पूजता हूं; वैसे ही मैं मनुष्य को पूजता हूं, जैसे गाय उपयोगी है, वैसे ही मनुष्य भी – फिर चाहे वह मुसलमान हो या हिंदू। तब क्या गाय को बचाने के लिए मैं मुसलमान से लड़ूंगा? क्या मैं उसे मारूंगा? ऐसा करने से मैं मुसलमान का और गाय का भी दुश्मन बनूंगा। इसलिए मैं कहूंगा कि गाय की रक्षा करने का एक ही उपाय है कि हमें अपने मुसलमान भाई के सामने हाथ जोड़ना चाहिए और उसे देश की ख़ातिर गाय को बचाने के लिए समझाना चाहिए। अगर वह न समझे तो मुझे गाय को मरने देना चाहिए, क्योंकि वह मेरे वश की बात नहीं है। अगर मुझे गाय पर अत्यंत दया आती हो तो अपनी जान दे देनी चाहिए लेकिन मुसलमान की जान नहीं लेनी चाहिए। यही धार्मिक कानून है, ऐसा मैं मानता हूं।' यानी गाय पूजनीय होते हुए भी, उसकी रक्षा के लिए किसी इंसान की जान लेने का हक़ हमें नही है। यह समझाने के लिहाज़ से उन्होंने आगे फिर लिखा कि 'मेरा भाई गाय को मारने दौड़े तो मैं उसके साथ कैसा बर्ताव करूँगा? उसे मारूँगा या उसके पैरों में पड़ूँगा? अगर आप कहेंगे कि मुझे उसके पाँव पड़ना चाहिए, तो मुझे मुसलमान भाई के भी पाँव पड़ना चाहिए।'

गांधी जी संघर्ष में कभी हताश नहीं हुए। आखिरी दम तक हार नहीं मानी। उनका जो रास्ता है, वह कर्म योग का रास्ता है, परिस्थिति से जूझने का रास्ता है। आज की समस्याओं से निपटने के लिए वही सही रास्ता है। गांधी ने विभिन्न धर्मों के बीच एक समान तत्व निकाला कि ईश्वर एक है। आज कई जगह लोग अतिवाद या चरमपंथ के रास्ते पर हैं। यह अतिवाद और चरमपंथ पूरी दुनिया के लिए एक बड़ा खतरा है। इससे सामाजिक शांति और स्थिरता भंग हो जाती है। जहाँ शांति और सामाजिक सद्भाव भंग होता है, वहाँ देश भी अस्थिर हो जाता है। भारत में लोगों को अभी भरोसा है कि हमारे बीच के लोग चुनकर जा रहे हैं शासन चलाने के लिए, और इसी डेमोक्रेसी से उनके जीवन में बदलाव आएगा, लेकिन जब भरोसा टूटता है तो क्या होता है, नेपाल में हिन्दू राष्ट्र दो मिनट में ख़त्म हो गया। वह राजा जिसको विष्णु का अवतार कहते थे, दो मिनट में उसको उतारकर फेंक दिया। हिन्दू राष्ट्र कहने से भारत का निर्माण नहीं होगा।हमें सामाजिक शांति लानी पड़ेगी। लोगों का जीवन खुशहाल बनाना होगा। गैरबराबरी ख़त्म करनी होगी।यही बात मुस्लिम उग्रवादियों पर भी लागू होती है।

गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का जो आग्रह रखा, उसका जिक्र योग दर्शन में भी है। यह योग का एक अनिवार्य तत्व है। उसमें कहा गया है कि जो अहिंसा की सिद्धि कर लेता है, उस योगी में किसी के प्रति वैर भाव नहीं होता है। जब योगी में सत्य की प्रतिष्ठा हो जाती है, यानी वह जीवन में सत्य का पालन करता है तो उसके मुंह से निकले वचन कभी निष्फल नहीं होते। गांधी जी ने इन गुणों को सामाजिक सद्गुण में परिवर्तित किया। वह केवल अंग्रेज़ों को नहीं हटाना चाहते थे, लगे हाथ भारत में सद्गुणों की प्रधानता वाला नया समाज बनाना चाहते थे—'अहिंसा अगर संगठित नहीं हो सकती तो वह धर्म नहीं है। यदि मुझमें कोई विशेषता है तो वह यह है कि मैं सत्य और अहिंसा को संगठित कर रहा हूं। यदि अहिंसा व्यक्तिगत गुण है तो यह मेरे लिए त्याज्य वस्तु है, मेरे लिए अहिंसा की कल्पना व्यापक है।'

16 मार्च 1940 को हरिजन में उन्होंने लिखा, 'हमें सत्य और अहिंसा को केवल व्यक्तियों की चीज नहीं बनाना है। हमें ऐसी चीज बनाना है जिस पर समूह, जातियां और राष्ट्र अमल कर सकें। मैं इसी को सच्चा करने के लिए जीता हूं। और इसी की कोशिश करते हुए मरूंगा।' उन्होंने कहा कि 'आचार के बिना कोरा बौद्धिक ज्ञान उस निर्जीव शरीर की तरह है जिसे मसाला भरकर सुरक्षित रखा जाता है। वह शायद देखने में अच्छा लगे, किंतु उसमें प्रेरणा देने की शक्ति नहीं होती। मेरा धर्म मुझे आदेश देता है कि मैं अपनी संस्कृति सीखूं, ग्रहण करूं और उसके अनुरूप चलूं, अन्यथा अपनी संस्कृति से विच्छिन्न होकर हम एक समाज के रूप में मानो आत्महत्या कर लेंगे, साथ ही वह मुझे दूसरों की संस्कृतियों का अनादर करने या उन्हें तुच्छ समझने से भी रोकता है'। गांधी जी भारत में ऐसा नागरिक समाज बनाना चाहते थे, जो अपनी पुरानी धार्मिक साम्प्रदायिक चेतना से ऊपर उठकर सामंजस्य से रहना सीखे। आज समूची दुनिया के लिए यह एक बड़ी चुनौती है कि कैसे अलग-अलग रंग, रूप, भाषा, बोली और संस्कृतियों के लोग आपस में सद्भावना के साथ मिलजुलकर रहें। गांधी विचार इसके लिए एक रास्ता दिखाता है।मगर इस विचार को संग्रहालयों और पुस्तकालयों से निकालकर समाज में ले जाने की ज़रूरत है।

वे कहते थे कि सह अस्तित्व केवल मानव-मानव के बीच नहीं चाहिए। प्रकृति और अन्य जीवों के साथ भी सह-अस्तित्व पर हमें सोचना होगा, वरना एकदिन यह पृथ्वी ही सलामत नहीं रहेगी, जिस पर कब्ज़े के लिए आज इतनी होड़ लगी है। ❑

धारावाहिक

बा : भारत वापसी

❑ गिरिराज किशोर

पहला गिरमिटिया जैसा चर्चित उपन्यास प्रस्तुत कर चुके गिरिराज किशोर ने अब बा पर कलम उठायी है। बा पर कुछ भी लिखना बहुत कठिन था। उनके बारे में उपलब्ध जानकारियां नहीं के बराबर हैं। 'पहला गिरमिटिया' की सामग्री जुटाने में उन्हें कोई दो हजार पुस्तकों से मदद मिली थी। और 'बा' उपन्यास लिखते समय मुश्किल से दो पुस्तकें सामने थीं। वे उन सब लोगों से मिले, जिन्हें कस्तूरबा के बारे में थोड़ी-सी भी जानकारी थी और उन जगहों पर गये, जहां बा ने थोड़ा या बहुत समय बिताया था। इस तरह बनी यह कथा, यह इतिहास बा के अलावा खुद बापू के दो और रूपों को भी सामने रखता है–पति और पिता का रूप। प्रस्तुत है 'बा' का अगला अंश, जो बा-बापू : 150 के अवसर पर क्रमशः प्रकाशित हो रहा है। –सं.

बा सोच रही थी कि उसके और बापू के बीच तनाव हरिलाल के कारण रहा, अब वही उसके अपने मन में होने लगा है, अपने प्रति। पहले कोई न कोई तर्क देकर वह अपनी बातों को उचित ठहराती रहती थी। बापू से झगड़ भी लेती थी। नागपुर के बाद हरिलाल को आज स्टेशन पर देखा। शराब और लगातार कर्ज में डूबे रहने के कारण वह और भी ज्यादा कटु हो गया है। हरि को समझना बापू को समझने से अधिक मुश्किल होता जा रहा है। बस एक ही रास्ता बचा है, उसे अपने हालात से स्वयं लड़ने दूं। कर भी क्या सकती हूं? सबसे अधिक दुख इस बात से होता है कि वह अपने बापू को उपहास का पात्र बना रहा है। अखबारों में छपने वाले पिता के विरुद्ध लिखे गये उसके पत्र, उनके अपने सिद्धांतों के विरोध में छप रहे हैं। बा अपने बड़े बेटे से इस व्यवहार से अंदर ही अंदर संतप्त थी। वह सब कुछ प्रकारांतर से उसके अपने विरुद्ध भी था। वह छोड़ता भी जा रहा था, छूटता भी जा रहा था, जैसे कोई बच्चा उछलकर तेज बहाव वाली नदी में जा गिरा हो। मां मूक और किंकर्तव्यविमूढ़ है।

मई 1936 में एक खबर प्रसारित हुई कि मोहनदास करमचंद गांधी के बेटे हरिलाल ने बम्बई की बड़ी मस्जिद में सार्वजनिक रूप से इस्लाम धर्म स्वीकार करके अपना नाम अब्दुल्ला रख लिया है। कस्तूर के मन में यह बात उसी दिन से करक रही थी, जब नागपुर में उसने हंसते हुए कहा था, मेरे कई दोस्त धर्म परिवर्तन के लिए दबाव डाल रहे हैं। हरि ने धर्म परिवर्तन करते हुए घोषित किया था कि उसने यह धर्म परिवर्तन अपने उत्थान के लिए किया है। लोगों का मानना था कि यह उत्थान अर्थमूलक है। उसके नये मुस्लिम मित्र उसे मौलवी कहने लगे थे। वह अपने धर्म परिवर्तन के बारे में प्रवचन करता घूमता था। कुछ सप्ताह के बाद ही उसके किसी दुर्व्यवहार के बारे में एक समाचार छपा था। बा ने देवदास को बुलाकर हरिलाल को पत्र लिखवाया :

मेरे प्यारे बेटे हरिलाल,

मैंने पढ़ा है कि मद्रास में तुम्हें पुलिस ने शराब के नशे की हालत में सड़क पर पड़े हुए देखकर हिरासत में ले लिया था। अगले दिन अदालत में पेश किया गया और मजिस्ट्रेट ने एक रुपया जुर्माना किया। जरूर वह एक रहम दिल इनसान रहा होगा, जिसने तुम्हें इतना कम दंड देकर छोड़ दिया।

मेरी समझ में नहीं आ रहा, मैं तुम्हें क्या कहूं। हमेशा समझाती रही हूं कि अपने आपको नियंत्रण में रखो। कभी सोचो अपने बूढ़े मां-बाप के बारे में। उनके जीवन के अवसान काल में कितना दुःख पहुंचा रहे हो। हालांकि तुम हमारे बेटे के रूप में जनमे हो, लेकिन वास्तव में अपने शत्रु हो।

मुझे पता चला है कि तुम अपनी यात्राओं में अपने महान पिता की आलोचना ही नहीं करते, उनका मजाक भी बनाते हो। तुम पिता की बुराई करके अपने ही को गिरा रहे हो। उनके दिल में तुम्हारे लिए प्यार के सिवाय कुछ नहीं। उन्होंने तुमसे अपने साथ रहने का आग्रह किया, साथ रहो, खाओ-पहनो। तुम्हारी देखभाल करने का आश्वासन भी दिया। लेकिन तुमने उनकी इच्छा का मान नहीं रखा। दुनिया में उनकी और भी जिम्मेदारियां हैं। तुम्हारे लिए वे इससे ज्यादा क्या करें? वे अपने भाग्य पर दुःख ही मना सकते हैं। चुपचाप अपना अपमान बर्दाश्त करते रह सकते हैं।

लेकिन जो मानसिक वेदना तुम मुझे दे रहे हो, वह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती। प्रत्येक सुबह जब उठती हूं तो सोचती हूं, पता नहीं आज तुम्हारे बारे में क्या समाचार छपा हो। तुम कहां हो, क्या खाते होगे, कहां सोते होगे? तुम छोड़ा हुआ खाना खाकर पेट भरते हो? तुम मेरे सबसे बड़े बेटे हो, पचास साल के। तुमसे मिलने में डरती हूं कि कहीं तुम मुझे ही अपमानित न कर दो।

तुमने अपने बुजुर्गों का धर्म क्यों बदल लिया? मैं क्या कहूं, यह तुम्हारा अपना मामला है। जब मैंने तुम्हारा वक्तव्य पढ़ा कि तुमने यह अपने उत्थान के लिए किया है तो यह सोचकर खुशी हुई कि अब तुम एक संजीदा जीवन जीना आरम्भ करोगे। लेकिन यह उम्मीद भी टुकड़े-टुकड़े हो गयी। मैंने सुना है कि तुम सीधे-सादे और अनजान लोगों से जाकर कहते हो कि वे तुम्हारा अनुसरण करें। तुम धर्म के बारे में क्या जानते हो? तुम क्या इस मानसिकता में हो कि किसी बारे में सही निर्णय ले सको? लोग भटक सकते हैं। क्योंकि तुम ऐसे महान पिता

के बेटे हो। अगर आगे भी तुम यह सब करते रहोगे तो लोग तुम्हें दुत्कारेंगे। मैं प्रार्थना करती हूं कि तुम अपनी गलतियां सुधारो। तुम्हारे बापू तो हर बार तुम्हें माफ कर देते हैं, ईश्वर तुम्हारे इस व्यवहार को कभी सहन नहीं करेंगे...।'

बा देवदास को बोलती जा रही थी, आंखों से टप-टप आंसू गिरते जाते थे। बा यहीं नहीं रुकी, उसने दूसरा पत्र समाचार-पत्रों के लिए लिखवाया :

'...मैं इस आशा से लिख रही हूं कि एक आहत मां की कमजोर आवाज उन मुसलमान भाइयों की आत्मा को जगायेगी जो मेरे बेटे के धर्म परिवर्तन के माध्यम थे।

मैं आपकी इस कारगुजारी को समझने में असमर्थ हूं। मुझे मालूम है, सोचने वाले मुसलमान साथी इस घटना को खारिज करते हैं...अपने बच्चे को वापिस लाने की जगह तथाकथित आस्था परिवर्तन, स्थिति को और बिगाड़ देगा। आप लोगों को उस लड़के को मौलवी का सम्मान देने की जगह लताड़ना चाहिए था। कोशिश करनी चाहिए थी कि बुरी आदतों से छुटकारा दिलाएं। क्या आपका धर्म मेरे बेटे जैसे आदमी को मौलवी कहने की इजाजत देता है? आपको उसे इस तरह चढ़ाने में क्या आनंद आता है?

अगर आप वास्तव में उसे अपना भाई मानते हो, तो जो आप कर रहे हो वह उसके हित में नहीं है। अगर आपका इरादा हमें हंसी का पात्र बनाना है तो मुझे कुछ नहीं कहना। आप जितना बुरा कर सकते हो, करो। जो मैंने अपने बेटे से कहा है, वही मैं आपके सामने दोहराना चाहती हूं, आप ईश्वर की नजर में यह ठीक नहीं कर रहे हो।'

देवदास ने अपना हाथ सहलाते हुए अपनी बा की तरफ देखा। वे भरी हुई थीं। वह पूछना चाहता कि क्या इन पत्रों का असर होगा। पर कहते-कहते रुक गया।

किसी ने जाकर हरिलाल उर्फ अब्दुल्ला से कहा, 'मौलाना, तुम्हारी हकीकी मां का खुतबा अखबार में शाया हुआ है। नजला हम पर गिरा है। हमने तुम्हें चढ़ाया है। जबकि हमने तुम्हें दोजख से निकालकर खुदावन्द का रास्ता दिखाया है। यह तो अल्लाह ही जाने हमने क्या किया है?' उस वक्त हरिलाल उनका ताना सुनने और समझने की हालत में नहीं था।

वर्धा से कुछ मील दूर सेगांव नाम का गांव था, पिछड़ा और छोटा-सा गांव। वहां न सड़क थी, न दुकान और न डाकखाना। बापू के मित्र जमनालाल बजाज की वहां काफी जमीन थी। बापू कहीं ऐसी जगह रहना चाहते थे जहां एकांत हो। बापू ने 1936 में 'गांव में रहने की मेरी सोच' नाम से एक लंबा पत्र जमनालाल बजाज को लिखा। उसमें लिखा था, 'मैं कुटिया में रहूंगा, बा रहना चाहेगी तो उसके साथ, नहीं तो अकेला। कुटिया बनाने में सौ रुपये से ज्यादा नहीं लगना चाहिए। कुटिया बनाने में जो जरूरत होगी, वह मैं सेगांव से ही इकट्ठा करूंगा। लेकिन मिलने वाले सेगांव नहीं आयेंगे, वर्धा में ही जाकर मिलूंगा। कुछ निश्चित किये गये दिनों में वर्धा में ही रहूंगा।'

जुलाई में कुटिया तैयार हो जाने के एक सप्ताह बाद बापू सात साथियों के साथ अपनी कुटिया में रहने चले गये।

बा अपनी पोती के साथ भरी गर्मी में पहुंचने वाली परिवार की पहली सदस्य थी। वे धूल-धक्कड़ में वर्धा से पांच मील चलकर सेगांव, बापू का नया घर देखने इस आशा में पहुंची थी कि उस भर चुके घर में, उन्हें भी एक कोना मिल जाये। वह गांव सांपों की बस्ती थी। उन दोनों को लौटना पड़ा। बा की कुटिया दिसंबर तक तैयार हो पायी। तब तक बा अपने मित्रों तथा अन्य संबंधियों के यहां घूमती-फिरती रही थी। कस्तूरबा की कुटिया भी गारे मिट्टी से बनी थी। बस उसमें बापू की कुटिया से एक बरामदा अधिक था। बापू उसे शहराती फैशन का घर कहते थे। बा तीन साल भटकने के बाद अनिकेत से सनिकेत हुई थी। इसलिए वह एक कमरा और बरामदा महल जैसा लगता था।

धीरे-धीरे उन दोनों कुटियों के इर्द-गिर्द बांस और गारे की और कुटियां बनने लगीं। बापू के नये अनुयाई भी आ बसे। उस जंगल में सड़कें काटी जाने लगीं, वृक्ष लगने शुरू हो गये। कुएं खुद गये। आसपास के गांवों के बच्चों के लिए एक स्कूल भी खुल गया। सामुदायिक रसोई भी स्थापित हो गयी। यहां तक कि उनके दक्षिण अफ्रीका के दोनों मित्र हरमन कैलनबैक और हेनरी पोलक भी उस नये परिसर का आनंद लेने और पुरानी यादें ताजा करने आ गये। 1915 में कैलनबैक बा-बापू के साथ भारत आने के इरादे से लंदन तक आये थे, लेकिन जर्मन होने के कारण ब्रिटिश सरकार ने उन्हें भारत आने से रोक दिया था। उन्हें निराश लौट जाना पड़ा था। जर्मनी और जर्मनीवासियों को ब्रिटिश सरकार ने शत्रु घोषित किया हुआ था।

1937 में बापू को लगा कि उनकी एक कुटिया, फैलते-फैलते एक छोटी-मोटी बस्ती बन गयी थी। वे यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि वह एक आश्रम है। लेकिन चाहे अनचाहे सेगांव आश्रम बन गया। तब उसका नाम सेगांव की जगह सेवाग्राम रख दिया गया।

मणिलाल, पत्नी सुशीला और पुत्र अरुण पहली बार सेवाग्राम आये थे। अरुण पहली बार आया और बीमार पड़ गया। तेज बुखार था। बापू ने उसे छह दिन के उपवास पर रख दिया। तीसरे दिन बुखार उतर गया। बुखार उतरते ही उसे तेज भूख लगी। सुशीला ने बापू से पूछा, 'अरुण का बुखार उतर गया है, उसे कुछ खाने के लिए दे दूं?'

बापू ने मना कर दिया, अभी और इंतजार करना पड़ेगा। बच्चा भूख से बेहाल था। बा की समझ में नहीं आ रहा था, वह क्या करे। एक तरफ बच्चे की भूख, दूसरी तरफ बापू का आदेश। अचानक बच्चे को महसूस हुआ कोई स्नेहसिक्त हाथ उसका सिर सहला रहा है, दूसरे हाथ का गिलास उसके होठों की तरफ बढ़ रहा है। बच्चे का गला सूख रहा था। उसने तत्काल घूंट भरी और वह घूंट अंदर तक उतरती चली गयी। बा शांत थी। वह निर्णायक स्वर में बोली, 'मैं अपने बच्चे को भूखा नहीं रहने दूंगी।'

गिलास में संतरे का रस था।

बापू देख रहे थे। उनके चेहरे पर सवालिया मुस्कान तैर गई। लंबी सांस लेकर बापू दूसरी ओर चले गये। उस समय दो संकल्पों का संघर्ष था, असीम और ससीम। बापू असहाय नजर आये। ऐसा पहली बार नहीं हुआ था। *...क्रमशः अगले अंक में*

अध्यक्ष की कलम से

खादीग्राम, रांची, बारडोली, दांडी, सेवाग्राम

❑ महादेव विद्रोही

सर्वोदय का राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र खादीग्राम

अखिल भारत चरखा संघ द्वारा 30 नवंबर 1943 को मुंगेर जिले के नूमर गांव में राजा कलानंद सिंह बहादुर, सुल्तानगंज, जिला भागलपुर से जमीन खरीदकर खादीग्राम की स्थापना की गयी। बाद में वहां और भी जमीनें खरीदी गयीं।

दिनांक 13-15 मार्च 1948 को सर्व सेवा संघ की स्थापना के बाद अखिल भारत चरखा संघ का सर्व सेवा संघ (अ.भा.सर्वोदय मंडल) में विलय हो गया। इस विलयन के कारण देशभर में फैली अखिल भारत चरखा संघ की संपत्तियां सर्व सेवा संघ के नाम स्थानांतरित हो गयी। साथ ही अखिल भारत चरखा संघ की गतिविधियों के संचालन की जिम्मेवारी भी सर्व सेवा संघ पर आ गयी।

अखिल भारत चरखा संघ के अध्यक्ष धीरेन्द्र मजूमदार सर्व सेवा संघ के पहले अध्यक्ष बने। उनके नेतृत्व में सर्व सेवा संघ ने दिनांक 12 मार्च 1952 को 'श्रमभारती' के नाम से अपना केन्द्र शुरू किया। पहले यह जंगलों एवं पहाड़ों वाला दुर्गम क्षेत्र था। देशभर के सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने अपने श्रमदान से इसे विकसित कर फलों के बगीचे लगाये, तालाब आदि बनवाये। यह सर्वोदय कार्यकर्ताओं का राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र बना।

यहां के सभी मकान सर्व सेवा संघ ने बनवाये, तालाब खुदवाये, गृहिणी विद्यालय तथा श्रमशाला की स्थापना की। पिछले कुछ समय से यहां के कार्यो में शिथिलता आई है। किसी कारणवश खादीग्राम का गृहिणी विद्यालय एवं श्रमशाला बंद हो गये हैं।

सर्व सेवा संघ ने इस पर विचार किया और सर्व-सम्मति से निर्णय किया गया कि–

1. गृहिणी विद्यालय को पुनः चालू किया जाय।

2. श्रमशाला लोगों को हुनर सिखाने का एक उपयोगी केन्द्र थी। इसे पुनः चालू किया जाय।

3. इस आदिवासी क्षेत्र में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की आवश्यकता है। अतः खादीग्राम में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने के लिए बिहार सरकार को आवश्यक जमीन उपलब्ध करायी जाय।

4. यहां पहले भारतीय स्टेट बैंक की शाखा थी जो किसी कारण बंद हो गयी है। उसे फिर से शुरू करने के लिये आवश्यक कार्रवाई की जाय।

खादीग्राम की गतिविधियों को सुचारु एवं सक्रिय रुप से चलाने के लिए एक संचालन समिति गठित की गयी। इस संचालन समिति से अपेक्षा है कि वह सर्व सेवा संघ की कार्यकारिणी समिति के निर्णयों एवं निर्देशों के अनुसार खादीग्राम में सर्व सेवा संघ की गतिविधियों को इस प्रकार संयोजित करे ताकि खादीग्राम सर्वोदय का जीवंत केन्द्र बने। सर्व सेवा संघ की कार्यसमिति खादीग्राम संचालन समिति के निर्णयों की समीक्षा करेगी एवं यदि आवश्यक हुआ तो इसमें परिवर्तन करेगी। कार्यसमिति का निर्णय अंतिम होगा।

दिनांक 2 एवं 3 जून 2019 को खादीग्राम में संचालन समिति की पहली बैठक भुवनेश्वर यादव की अध्यक्षता में हुई। मैं भी आमंत्रित के रूप में उपस्थित था।

यहां कृषि विज्ञान केन्द्र आरंभ होने के बाद पिछले करीब 20-25 सालों में खादीग्राम उजड़ सा गया है। घर टूट गये हैं और छप्परों के खपरैल गायब हो गये हैं, अनेक घरों में बड़ी-बड़ी घास उग आयी है, कृषि विज्ञान केन्द्र पर लाखों रुपये के बिजली के बिल का बकाया हो जाने के कारण लाइन कट गयी है। फलस्वरूप पानी का भीषण संकट पैदा हो गया है। एक ऐसी जगह जो प्रेरणा का राष्ट्रीय केन्द्र था, उसे इस तरह उजड़ा हुआ देखकर दिल अन्दर से रोने लगा।

काफी प्रयत्न करके सर्व सेवा संघ के नाम बिजली का नया कनेक्शन लिया गया। संचालन समिति ने इसे नये सिरे से विकसित करने के लिए कई कदम उठाने के निर्णय लिये हैं। हर 15 दिन पर संचालन समिति की बैठक होगी जिसमें स्थिति की समीक्षा कर नये कार्यक्रम शुरू किये जायेंगे।

सम्पूर्ण क्रांति मिलन

इस वर्ष का सम्पूर्ण क्रांति मिलन रांची में आयोजित किया गया। यूं तो सम्पूर्ण क्रांति दिवस 5 जून को होता है पर इस वर्ष 5 जून को ईद होने के कारण 4 जून को ही सम्पूर्ण क्रांति मिलन आयोजित किया गया। मिलन का आयोजन सर्व सेवा संघ, गांधी 150 जयंती अभियान (झारखंड), झारखंड सर्वोदय मित्र मंडल तथा राष्ट्रीय लोकसमिति की ओर से हुआ।

इस मिलन में तय हुआ कि युवाओं के शिविर किये जायेंगे, 9 अगस्त तथा 2 अक्तूबर को झारखंड के स्कूलों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन एवं कार्यों पर निबंध प्रतियोगिता, चित्र प्रतियोगिता एवं वक्तृत्व प्रतियोगिताएं आयोजित की जायेंगी।

बारडोली में

सर्वोदय समाज के आगामी सम्मेलन की दृष्टि से 28 मई को सर्वोदय समाज के

संयोजक जयवंत मठकर, गुजरात लोक समिति की मंत्री नीता महादेव, समन्वयक मुदिता विद्रोही एवं सर्व सेवा संघ के महामंत्री शेख हुसैन के साथ स्वराज आश्रम, बारडोली जाना हुआ। बापू यहां 1937, 1938, 1941 एवं 1942 में आये। 1938 एवं 1941 में यहां अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी की बैठकें हुई। जब हरिपुरा में अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी का सम्मेलन हुआ तब स्वराज आश्रम उसका मुख्य केन्द्र था।

स्वराज आश्रम में खादी, ग्रामोद्योग, काष्ठ कला, मिट्टी कला, प्रशिक्षण सहित अनेक तरह की गतिविधियां चलती हैं। पर इनमें सबसे मुख्य है कन्या विद्यालय। यहां गांधीजी की नई तालीम की कल्पना पर शिक्षा दी जाती है। यहां तो 10वीं तक की ही शिक्षा की व्यवस्था है पर जो लड़कियां 10वीं से आगे की पढ़ाई करना चाहती है, उन्हें आश्रम की ओर से दूसरे स्कूलों में शिक्षा दिलवायी जाती है। उनके निवास, भोजन तथा शिक्षा संबंधी अन्य खर्च आश्रम उठाता है।

निरंजना बहन कलार्थी तथा उनकी पुत्री डॉ. प्रज्ञा कलार्थी अपनी पूरी क्षमता तथा निष्ठा के साथ इसका सफल संचालन कर रही हैं। यह इस क्षेत्र के आदिवासी एवं पिछड़े वर्ग के अभिभावकों के लिए कन्या शिक्षण हेतु विश्वास एवं श्रद्धा का केन्द्र है।

दांडी में

29 मई 2019 को हम दांडी पहुंचे। दांडी भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में मील का पत्थर है। अंग्रेजों द्वारा नमक पर बेशुमार कर लगाने के विरोध में 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने साबरमती आश्रम से दांडी तक की यात्रा की थी।

384 कि.मी. की यात्रा कर 6 अप्रैल 1930 को यात्रा दांडी पहुंची। नमक बनाने के अहिंसक सत्याग्रह पर अंग्रेजों ने नाना प्रकार के जुल्म किये। गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। मठकर जी की इच्छा थी कि गांधीजी के 150वें जयंती वर्ष में सर्वोदय सम्मेलन दांडी में हो। हम साथियों ने वहां जाकर धीरुभाई पटेल एवं अन्य लोगों से चर्चा की। यहां सम्मेलन करना भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत कठिन एवं चुनौती भरा है। सबसे बड़ी कठिनाई पानी की है जो करीब 10 कि.मी. दूर से लाना पड़ता है। दूसरे, निवास की वहां कोई व्यवस्था नहीं है।

सर्वोदय समाज की बैठक

11 जून 2019 को सर्वोदय समाज की बैठक सर्व सेवा संघ के सेवाग्राम कार्यालय में हुई। मठकर जी ने कहा कि व्यवस्था की दृष्टि से हम हर दो साल में सर्वोदय सम्मेलन करते हैं पर यह गांधी की 150वीं जयंती का वर्ष है इसलिए इस वर्ष सर्वोदय सम्मेलन होना ही चाहिए। नागपुर के साथियों ने सम्मेलन नागपुर में करने का निमंत्रण दिया। 12 जून को मठकर जी, शेख भाई, अविनाश भाई आदि नागपुर गये एवं नागपुर के विभिन्न व्यक्तियों तथा संस्थाओं से मिलकर बातचीत की

सर्वोदय समाज सम्मेलन

सर्वोदय समाज का 48वां सम्मेलन 27-28-29 दिसम्बर 2019 को नागपुर में होना तय हो गया है। अन्य विवरण शीघ्र ही प्रेषित किये जायेंगे।

नागपुर ही क्यों

नागपुर आज़ादी के आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। 1960 तक यह मध्य भारत की राजधानी थी। यहीं बाबा साहब आंबेडकर ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली थी। 1923 में नागपुर का प्रसिद्ध ध्वज सत्याग्रह इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना है। यह सत्याग्रह भारतीय नागरिकों का ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक शांतिपूर्ण सविनय अवज्ञा की तरह था। देश के विभिन्न हिस्सों में हुए इस सत्याग्रह का केन्द्र नागपुर ही था। ब्रिटिश सरकार के प्रतिबंधों और उसकी वैधता से इनकार करने के लिए हर घर पर ध्वज फहराकर ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ शांतिपूर्ण मोर्चा खोला गया था। ❑

जल संकट की भयावह तस्वीर

'बुंदेलखंड में गांवों से पलायन कर रहे लोग'

भीषण धूप और गर्मी में तपकर पत्थर की तरह हो चुके खेत, चारे और पानी की आस में दूर-दूर तक भटकते हुए मवेशी, सिर पर घड़े रखकर पानी की तलाश में निकली महिलाएं, सूखे हुए जलस्रोत और तमाम घरों पर लटके हुए ताले, यह पानी से लगभग रिक्त हो चुके बुंदेलखंड की भयावह तस्वीर है।

लंबे समय से लगातार सूखे का सामना करते हुए बुंदेलखंड के लोगों की जिजीविषा को समझने के लिए बुंदेलखंड की पहचान बन चुकी यह तस्वीर अपने आप में पर्याप्त है। गांवों में तालाब नहीं बचे, कुंए सूख चुके हैं, खेती-बारी ठप है और कोई समाधान कहीं दीखता नहीं है। पीने के लिए बुंदेलखंड के गांवों में पानी के टैंकर भेजे जाते हैं लेकिन जनप्रतिनिधि और अधिकारी उसमें भी बंदरबांट कर लेते हैं।

बुंदेलखंड में पानी का यह संकट कोई नया नहीं है बल्कि यह सदियों से रहा है लेकिन पहले लोगों ने जल संचयन का उचित प्रबंधन किया था, जिसकी वजह से जल स्तर बहुत नीचे नहीं जा पाता था। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, तालाबों पर अतिक्रमण और कुंओं की दुर्दशा ने जल संचयन की प्राकृतिक व्यवस्था को नष्ट कर दिया है, जिसका प्रभाव वर्तमान जल संकट के रूप में दिख रहा है। और अब यह जल संकट केवल बुंदेलखंड का नहीं रह गया। धीरे-धीरे यह पूरे देश में अपने पांव पसार रहा है। देश के विभिन्न हिस्सों से जलस्रोत सूखने और पानी के अभाव में लोकजीवन अस्त-व्यस्त होने की खबरें आ रही हैं। तालाबों, कुओं और पेड़ों की पारंपरिक व्यवस्था की ओर समाज को लौटना ही होगा, वरना बुंदेलखंड की यह तस्वीर बड़ी ही होती जायेगी और एक दिन पूरा देश जल संकट के सामने खड़ा होगा।

सत्तर साल पहले

मेवात की भूमि पर निर्वासितों का पुनर्वास

❑ दामोदरदास मूंदड़ा

दो वर्ष पहले, साम्प्रदायिक झगड़ों के दिनों में, अलवर, भरतपुर, और पूर्व पंजाब में जो दुर्घटनाएं हुईं, उसके फलस्वरूप हजारों मेव-किसान, अपने घर-बार से हाथ धो, जमीनें भी खो बैठे थे। हर कोई उन्हें नफरत की निगाह से देखने लगा था। बापू उस समय कलकत्ता में चमत्कार करके दिल्ली लौटे ही थे। हुमायूं मकबरे में जाकर मेव कैम्प उन्होंने देखा, और अपनी पहले रोज की प्रार्थना में ही कहा ''जो मेव यहीं हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं, उन्हें फिर से बसाना हमारा धर्म है।''

विनोबा का आगमन

उस समय, भय के कारण भारत छोड़कर भाग निकलने से बापू ने मेवों को रोका। लेकिन उन्हें फिर बसाने के लिए देश में अनुकूल परिस्थिति निर्माण करने का काम बापू ने आरंभ किया ही था कि उनका निर्वाण हो गया। अपना एकमात्र सहारा खो जाने से मेवों के दुःखों का पार नहीं रहा। वे असहाय तो थे ही, अब प्रतिकूल तत्त्व उनकी पीड़ा का पुनः कारण बन गये थे। ऐसी बिपदा की बेला में उनके बीच विनोबाजी आये। कार्य की कठिनता उनसे छिपी नहीं थी। लेकिन उन्होंने सहज ही देखा कि इस समस्या को सुलझाना देश का सिर ऊंचा उठाना है। उन्होंने इस काम को अपने ऊपर ले लिया।

असहाय मेव

भारत सरकार ने भी मेवों को फिर से बसाने का तय किया ही था। लेकिन उन्होंने मेवों की सुरक्षा की दृष्टि से यह सोचा था कि उन्हें एक सटे हुए प्रदेश में ही बसाया जाय। कुछ मेव शुरू में पाकिस्तान चले गये थे। जो बचे हुए थे उनकी मर्दुमशुमारी ली गयी। और उनके लिए आवश्यक जमीन भी तय कर दी गयी। अफसरों को हिदायतें भी जारी हुईं। किन्तु सरकार की इच्छा और हिदायतों के बावजूद, मेव इस नये प्रदेश में समय पर बस नहीं पाये। हर वक्त कोई नयी दिक्कत पेश आती और काम में देरी होती रहती। नतीजा यह हुआ कि मेव अपने बाल-बच्चों को लेकर बिना घर-बार, दरख्तों के नीचे या रिश्तेदारों के यहां असहाय हालत में दिन बिताते रहे।

हर हालत में अहिंसा

इधर उनके हिस्से की कुछ जमीनें पाकिस्तान से आये हुए निर्वासित भाइयों को भी दी जा चुकी थीं। एक के बाद एक तीन फसलें बिना बुआई के ही हाथ से निकल चुकी थीं। मेवों की यह हालत विनोबा देख रहे थे। इसलिए उन्हें एक से अधिक बार मेवात जाना पड़ा था। सैकड़ों की तादाद में मेव-किसान विनोबा के पास आते, और अपना दुःख सुनाते! वे जुम्मे के रोज दोपहर की नमाज़ के वक्त अपनी मस्जिदों में, विनोबा को बुलाते और उनसे मार्गदर्शन करने की प्रार्थना करते। विनोबा उन्हें, 'हर हालत में अहिंसा का पालन' करने की हिदायत देते रहते।

हृदय परिवर्तन

इस बीच जमाना भी काफी बदल गया। दोनों कौमों ने अबतक यह देख लिया था कि वह जहरीली हवा, जिसने मुल्क को इतना तबाह किया था, निकल चुकी है। इंसानियत, अपने स्वाभाविक रूप में, फिर से प्रकट होने लगी थी। सबसे बड़ी खुशी की बात तो यह हुई कि जिन लोगों ने मेवों को निकाल बाहर किया था, उन्हीं में से बहुत से उन्हें अब वापस बुलाने लगे। इसका कुछ श्रेय तो वहां की धरती को भी देना होगा—क्योंकि जो निर्वासित भाई मेवात की भूमि पर आकर बसे थे, वे अपनी सेवा से उसे प्रसन्न नहीं कर सके थे—मेवों के जोते ही वह जमीन जुतने वाली थी।

पुनरागमन

अब मेव फिर से अपने टूटे फूटे घरों में आकर बसने लगे। भारत सरकार, पंजाब सरकार, मत्स्य सरकार, तीनों ने फैसला किया कि मेवों को अपनी ही जमीनें और मकान वापस मिले। अर्थात् जो जमीनें निर्वासित भाइयों को दी जा चुकी थी, उन्हें छोड़कर।

दीर्घ-सूत्रत्व

काम तेजी से हो सके, और कम से कम यह फसल उनके हाथ लग सके, इसलिए सत्यम् भाई, जो विनोबा की तरफ से मेवों के बीच काम कर रहे थे, ने विनोबा को एक बार फिर मेवात बुला लिया। अब फैसला तो सब हो चुका था। बारिश का समय भी नजदीक था। बारिश से पहले बसाने का काम होना चाहिए, यही विनोबा को फिक्र थी। पंडित जवाहरलालजी को भी यही फिक्र थी। लेकिन आखिर दीर्घ-सूत्र तो चला ही। मेवों का बसना और उन्हें समय पर जमीनें मिलना उस दीर्घ-सूत्र के कारण फिर एक बार खतरे में पड़ गया।

बस गये

लेकिन आखिर इस सारे काम की जिम्मेवारी राजस्थान संघ को सौंपकर यह दीर्घसूत्रत्व तोड़ा गया। और बारिश भी दस पन्द्रह दिन देरी से शुरू हुई। कुल मिलाकर ईश्वर की इच्छा से यह काम पूरा हुआ। अब बहुत सारे मेव बस गये हैं। मेवों के अलावा कुछ दूसरे मुसलमान अभी रह गये हैं। लेकिन आशा है कि वह काम भी यथा-समय पूरा हो जायेगा।

एक नयी अनुभूति; अशिक्षितों का सद्भाव

इन दो वर्षों में, ये मेव, विनोबा के निकट संपर्क में आ चुके थे। उनके जीवन का शायद ही कोई हिस्सा विनोबा से छिपा रहा हो। मेवों के दिलों में अपने वतन के लिए जो आकर्षण थ, उसका असर विनोबा पर विशेष हुआ दीखता था! वर्धा लौटने पर, इसबार पहले रोज की प्रार्थना में मेवात के अपने अनुभवों का जिक्र करते हुए विनोबा ने कहा :—

वतन का इतना प्रेम, शिक्षित वर्गों में कम मिलता है। मेव जमीन जोतते हैं, उसकी सेवा करते हैं, इसलिए वहां की मिट्टी, वहां के पेड़, वहां के कंकड़ पत्थर, सबसे उनका प्रेम हो जाता है। वे कवि नहीं हैं इसलिए शब्दों में अपने भाव प्रकट नहीं कर सकते। पर हृदय से वे कवि ही हैं। माता को अपने बच्चे से जो प्रेम होता है, उसे वह शब्दों में प्रकट नहीं कर सकती। मेवों का ऐसा ही प्रेम मैंने देखा है, उन अशिक्षित लोगों में कितना गहरा सद्भाव भरा पड़ा है। वैसे वे लोग मुसलमान हैं। मुसलमान के नाते, उनका नमाज आदि का कार्यक्रम चलता रहता है। उनको मालूम है कि अल्ला सब तरफ है। लेकिन उनका यह हाल है कि अपनी जमीन पर जब तक नमाज नहीं पढ़ लेंगे, तसल्ली नहीं होने वाली है। मानो, अपने उन पेड़ों के नीचे उन्हें परमेश्वर का ही दर्शन होता है।'' ❑

धर्मनिरपेक्षता, प्रजातान्त्रिक समाज और अल्पसंख्यक अधिकार

❑ राम पुनियानी

हम एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जब सामाजिक मानकों और संवैधानिक मूल्यों का बार-बार और लगातार उल्लंघन हो रहा है। पिछले कुछ वर्षों में दलितों पर बढ़ते अत्याचार और गौरक्षा के नाम पर अल्पसंख्यकों की लिंचिंग ने समाज को झिंझोड़ कर रख दिया है। इस सबके पीछे है सांप्रदायिक राजनीति का परवान चढ़ना। यह वह राजनीति है जो संकीर्ण सांप्रदायिक और धार्मिक पहचान पर आधारित है।

धर्मनिरपेक्षता का अंत हमेशा से साम्प्रदायिकता का लक्ष्य रहा है। यह सही है कि धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा के कार्यान्वयन में कई कमियां रहीं हैं। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर शाहबानो मामले में अदालत के निर्णय को पलटने और बाबरी मस्जिद के दरवाजे खोलने जैसी गंभीर भूलें की गईं है। परन्तु यह कहना कि अल्पसंख्यकों का तुष्टिकरण हुआ है, एक सफ़ेद झूठ है। गोपाल सिंह और रंगनाथ मिश्र आयोगों और सच्चर समिति की रपटों से पता चलता है कि मुसलमानों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति न केवल ख़राब है, बल्कि गिरती ही जा रही है। मुस्लिम समुदाय के कुछ कट्टरपंथी तत्वों का कितना ही भला हुआ हो परन्तु आम मुसलमान आर्थिक दृष्टि से बदहाल हुआ है और समाज में अपने आप को असुरक्षित महसूस करता है। हमें इस बात पर चिंतन करना ही होगा कि हम अपने देश में धर्मनिरपेक्षता के दर्शन को ज़मीन पर क्यों नहीं उतार सके।

धर्मनिरपेक्षता की कई परिभाषाएं और व्याख्याएं हैं। भारतीय सन्दर्भ में सर्वधर्म समभाव धर्मनिरपेक्षता की सबसे स्वीकार्य व्याख्या है। इसके साथ ही राज्य का धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करना और धर्म व पुरोहित वर्ग का राज्य की नीति में कोई दखल न होना भी धर्मनिरपेक्षता का हिस्सा है। धर्मनिरपेक्षता प्रजातंत्र का मूल अवयव है और दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। इस सिलसिले में कुछ उदाहरण दिए जा सकते हैं। जब यह मांग उठी कि सरकार को सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण करना चाहिए तब गाँधीजी ने कहा कि हिन्दू समुदाय यह काम करने में सक्षम है।

गांधीजी ने धर्मनिरपेक्षता की अत्यंत सारगर्भित परिभाषा देते हुआ लिखा कि धर्म और राज्य अलग.अलग होंगे। मैं अपने धर्म में विश्वास रखता हूँ। मैं उसके लिए जान भी दे दूंगा। परन्तु यह मेरा व्यक्तिगत मामला है। राज्य का इससे कोई लेना.देना नहीं है। राज्य आपकी दुनियावी बेहतरी का ख्याल रखेगा। समाज विज्ञानी राजीव भार्गव लिखते हैं कि धर्मनिरपेक्षता न केवल भेदभाव, बल्कि धार्मिक वर्चस्व के और भी विकृत स्वरूपों जैसे बहिष्करण, दमन और तिरस्कार की खिलाफत करती है, वह प्रत्येक धार्मिक समुदाय के भीतर वर्चस्व यथा महिलाओं, दलितों या असहमत व्यक्तियों के दमन का भी विरोध करती है।

भारत में धर्मनिरपेक्षता की राह आसान नहीं रही है। यह अवधारणा औपनिवेशिक काल में उभरते हुए वर्गों के ज़रिये आई। ये वे वर्ग थे जो औद्योगीकरण व संचार के साधनों के विकास और आधुनिक शिक्षा के प्रसार के साथ अस्तित्व में आये। इन वर्गों ने देश में हो रहे समग्र परिवर्तनों को भारत के राष्ट्र बनने की प्रक्रिया के रूप में देखा। भगत सिंह, आंबेडकर और गाँधी जैसे महान व्यक्तित्वों ने धर्मनिरपेक्षता को अपनी राजनैतिक विचारधारा और एक बेहतर समाज के निर्माण के अपने संघर्ष का आधार बनाया। ये लोग भारतीय राष्ट्रवाद के हामी थे।

इसके विपरीत अस्त होते वर्गों जैसे राजाओं और जमींदारों ने सामाजिक बदलावों और अपने वर्चस्व की समाप्ति की सम्भावना से घबरा कर सांप्रदायिक राजनीति का सहारा लिया। सांप्रदायिक राजनीति आगे चलकर दो धाराओं में बंट गयी, हिन्दू साम्प्रदायिकता और मुस्लिम साम्प्रदायिकता। वह क्रमशः हिन्दू राष्ट्र और मुस्लिम राष्ट्र के निर्माण का स्वप्न देखने लगी। जैसा कि प्रोफेसर बिपिन चन्द्र लिखते हैं—साम्प्रदायिकता धार्मिक समुदाय को राष्ट्र का पर्यायवाची मानती है। भारत में साम्प्रदायिकता का दानव विकराल रूप धारण कर चुका है। साम्प्रदायिकता की विचारधारा मानती है कि एक धार्मिक समुदाय के सभी सदस्यों के हित समान होते हैं और वे दूसरे समुदाय के हितों से अलग होते हैं। इसलिए एक धार्मिक समुदाय दूसरे धार्मिक समुदाय का स्वाभाविक प्रतिद्वंदी होता है। सांप्रदायिक राजनीति के पैरोकार मानते हैं कि दूसरा समुदाय हमारे समुदाय के लिए खतरा है। यह राजनीति धार्मिक समुदायों के भीतर के ऊंच-नीच पर पर्दा डालती है और जातिगत व लैंगिक पदक्रम बनाये रखना चाहती है।

भारत में बढ़ती साम्प्रदायिकता धर्मनिरपेक्षता के लिए एक बड़ी चुनौती है। पाकिस्तान में तो मुस्लिम सांप्रदायिक ताकतें शुरू से ही बहुत मज़बूत थीं। भारत में साम्प्रदायिकता पिछले चार दशकों में मज़बूत हुई है। और इसका कारण है सांप्रदायिक हिंसा से जनित धार्मिक ध्रुवीकरण। राममंदिर, लव जिहाद, घरवापसी और पवित्र गाय जैसी पहचान से जुड़े मुद्दे भारत में साम्प्रदायिकता को हवा देते रहे हैं। साम्प्रदायिकता देश के धर्मनिरपेक्ष चरित्र के लिए एक बड़ा खतरा है। वह इस देश को सच्चे अर्थों में धर्मनिरपेक्ष बनाने की राह में एक बड़ा रोड़ा है।

भारत में औपनिवेशिक शासन के कारण राष्ट्रीय आन्दोलन की ऊर्जा मुख्य रूप से औपनिवेशिक शासकों का विरोध करने में व्यय हुई और राजा और जमींदार, जिनके साथ बाद में उच्च मध्यम वर्ग का एक हिस्सा भी जुड़ गया, हाशिये पर तो खिसक गए परन्तु उनका प्रभाव समाप्त नहीं हुआ। वे ही आगे चल कर सांप्रदायिक राजनीति के झंडाबरदार बने। इस राजनीति ने अंततः देश का विभाजन किया और समाज में कई नकारात्मक प्रवृत्तियों को जन्म दिया। परन्तु यह निश्चित है कि सांप्रदायिक ताकतें भारत के बहुवाद और उसके विविधवर्णी चरित्र को कभी समाप्त नहीं कर सकेंगीं। उनकी हार होकर रहेगी। ❑

ब्लड डायमंड के लिए ब्लड बाथ

❑ प्रेम प्रकाश

क्या कभी आपने यह जानने की कोशिश की है कि आपके हाथ में मोबाइल का जो हैण्डसेट है, वह किस धातु का बना है? यह धातु कहां से आती है और इसे हासिल करने के लिए दुनिया में कितनी बड़ी जंग चल रही है? यह विकास की एक अंधी और दिशाहीन दौड़ है, जिसने दुनिया के हर समाज में आम आदमी को संघर्ष के रास्ते पर डाल दिया है। इन संघर्षों के पीछे आम आदमी के जीने मरने के सवाल खड़े हैं। दुनिया में हर कहीं नैसर्गिक सम्पदाओं को कुछ लोगों के अधीन करने के लिए सत्ता का इस्तेमाल अपने चरम पर है, पर लोक मत इसके विरुद्ध है और वह अपनी लड़ाई अपने तरीके से लड़ रहा है।

ताजा खबर डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो से आयी है, जहां कोल्टान नाम की धातु की 80 फीसदी खदानें हैं। कोल्टान एक प्रकार का अयस्क है, जिसका इस्तेमाल विभिन्न इलेक्ट्रानिक उपकरणों के निर्माण में होता है। इसमें नामोबियम और टैंटेलम जैसी धातुएं भारी मात्रा में पायी जाती हैं। टैंटेलम में मौजूद खनिज तत्व को टैंटेलाइट कहते हैं, जिसकी मदद से सेलफोन, डीवीडी प्लेयर, लैपटाप और कम्प्यूटर इत्यादि बनाये जाते हैं। खासकर मोबाइल के निर्माण में इसके महत्व के कारण दुनिया भर की मोबाइल कंपनियों में कोल्टान की डिमांड दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ रही है। सेलफोन में इसका काम बोल्टेज नियंत्रण और ऊर्जा संरक्षण का होता है।

जाहिर है कि इसके निर्माण में उपयोगिता के कारण कोल्टान की खदानों के दोहन में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अलावा स्थानीय समाजों के दबंग लोगों और समूहों ने भी अपनी पूरी ताकत लगा रखी है। कोल्टान के मामले में प्रकृति कांगों गणराज्य पर मेहरबान रही है। इसके अलावा भी कोल्टान अलग-अलग मात्राओं में आस्ट्रेलिया, ब्राजील, थाईलैण्ड, मलेशिया, इथियोपिया और चीन आदि देशों में पाया जाता है। भविष्य में इसके सऊदी अरब, मिश्र, ग्रीनलैण्ड, कनाडा और अफगानिस्तान में भी पाये जाने की संभावना है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अलावा कांगों और उसके पड़ोसी देशों में रहने वाले बाहुबलियों ने अपनी-अपनी सभाएं और समितियां बना रखी हैं तथा कोल्टान के लिए उनमें आपस में जंग जारी है। खदानों से कोल्टान निकालने के लिए बच्चों से मजदूरी करायी जाती है, उनके स्कूल तबाह कर दिये गये हैं और महिलाओं का यौन उत्पीड़न हो रहा है। सूचना जगत में क्रान्ति लाने वाले इस अयस्क ने 1998 से अब तक के 20-21 वर्षों में हजारों जिन्दगियों का खून बहाया है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले दशक में इस अयस्क ने हर महीने लगभग 45 हजार जिन्दगियां ली हैं। काले रंग की इस धातु को ब्लड डायमंड कहकर पुकारा जाने लगा है। प्राकृतिक संसाधनों पर स्थानीय समाजों का अधिकार होता है, यह बात दुनिया के लगभग सभी विद्वानों, दार्शनिकों, मनीषियों और सामाजिक सरोकारों से जुड़े लोगों ने कही है। लेकिन कोल्टान की अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भारी कीमतों को देखते हुए स्थानीय और अन्तर्राष्ट्रीय ताकतें इसके दोहन में लगी हुई हैं। कांगों के स्थानीय निवासी कोल्टान की बेसिनों में हाथ से इसकी खुदाई करते हैं। कोल्टान युक्त मिट्टी की खुदाई करके वे इसे बर्तन में रखते हैं और उसमें पानी भर देते हैं। थोड़ी देर बाद कोल्टान अयस्क बर्तन की तली में आकर बैठ जाता है। इस प्रकार एक आदमी दिनभर मेहनत करके लगभग 1 किलो कोल्टान प्राप्त कर लेता है। एक समय इसकी अन्तर्राष्ट्रीय कीमत 600 अमेरिकी डॉलर प्रति किलोग्राम तक पहुंच गयी थी, लेकिन आज एक स्थानीय मजदूर कोल्टान की खुदाई से 200 डालर प्रतिमाह तक की कमाई कर सकता है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है कि कोल्टान की खुदाई और उसकी बिक्री के काम में एकाधिकार जमाने के लिए स्थानीय नगरिक समूहों में भयंकर युद्ध चल रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार पड़ोसी देश रवांडा की सेना ने 18 महीने से भी कम समय में 250 लाख डालर के कोल्टान की खुदाई की। युगांडा और बुरुंडी की सेनाओं ने भी कोल्टान की स्मगलिंग बेल्जियम जैसे देशों में की है। कांगों के उस मुख्य इलाके में जहां कोल्टान की खदानें भारी मात्रा में हैं, काहूजी बेगा नेशनल पार्क स्थित है। इस पार्क में पहाड़ी गुरिल्ला प्रजाति का निवास भी है। कोल्टान के लिए युद्ध के कारण गुरिल्ला आबादी आधे से भी कम रह गयी है। खुदाई को आसान बनाने के लिए खदानों के आसपास की आबादी को विस्थापित कर दिया गया है। इस विस्थापन से उपजी गरीबी के कारण लोग इन गुरिल्लों को भी मारकर खा जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले पांच वर्षों में लगभग 90 प्रतिशत गुरिल्ला आबादी नष्ट हो चुकी है और अब वे लगभग 3 हजार की संख्या में ही बचे हैं।

ये आंकड़ें हमारे विकास की भयावह तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। विकास की यह वह दौड़ है, जिसमें आम आदमी की जिन्दगी, उसका वर्तमान, उसका भविष्य सब कुछ पैसे के बल पर खरीद लिया जाता है। प्रतिकार में जो ताकतें सामने खड़ी होती हैं, उन्हें कुचल दिया जाता है। दमन की नींव पर खड़ी हो रही इस विकसित सभ्यता के बरक्स कुछ मासूम जिन्दगियां है, कुछ अंधकार में डूबे भविष्य हैं और कुछ चिंतायुक्त वर्तमान हैं, जिनकी तरफ हर नजर कुटिल बनकर ही उठती है और मजदूरों का तैरता हुआ खून, उनकी जिन्दगी के सपनों को बहा ले जाता है। सौ साल पहले गांधी ने हिन्द स्वराज्य के माध्यम से कहा था कि यह शैतानी सभ्यता है और एक दिन यह सभ्यता खुद ही खुद को नष्ट कर देगी। हिन्द स्वराज्य में लिखे ये दोनों वाक्य, आज की भयानकता के सापेक्ष सत्य और प्रामाणिकता के उद्घोष वाक्य बन गये हैं। इसलिए भारत ने भले ही गांधी को सूली पर लटका कर चैन पा लिया हो, पर बाकी दुनिया को भारत के गांधी की जरूरत ज्यादा महसूस हो रही है। मानव के रक्त से नहायी कांगों की धरती, गांधी की नित्य अपरिहार्य होती जाती चेतना पर मुहर लगाती है। ❑

आवरण-कथा

बैलाडीला : अदानी से जंगल की रक्षा के लिए आदिवासियों का सत्याग्रह

नृत्य और गीत गढ़ रहे प्रतिरोध!

❑ पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

बस्तर के आदिवासी लाखों पेड़ों से आबाद अपने आस्था के पहाड़ नंदराज को बचाने के लिए धरना दे रहे हैं। वे दिन भर नारे लगाते हैं और रात को जल, जंगल और जमीन से जुड़े आंदोलन के गीत गाते हैं। पहाड़ की लौह अयस्क खदान अदानी को दिए जाने के विरोध में इनके स्वर मुखर होते जा रहे हैं। गौरतलब है कि बस्तर के दंतेवाडा जिले के किरंदुल स्थित बैलाडीला आयरन ओर माइंस परिसर (एनएमडीसी) कार्यालय के सामने आदिवासियों का आंदोलन सात जून को शुरू हुआ था। दंतेवाड़ा जिले की संयुक्त पंचायत समिति की अगुवाई में हो रहा यह आन्दोलन एनएमडीसी द्वारा अदानी ग्रुप को 13 नंबर खदान दिए जाने के विरोध में हो रहा है।

इस धरना प्रदर्शन में शामिल होने के लिए लोग दूर दराज के गाँवों से अपने साथ राशन पानी लेकर एक दो दिन का पैदल सफ़र तय करके यहाँ पहुंचे हैं। करीब 60 साल की आदिवासी महिला जोगी मंडावी हम से बात करते हुए कहती हैं कि जब तक हम नंदराज पहाड़ को नहीं बचा लेते हैं, तब तक यहाँ से नहीं जाएंगे। उन्होंने आगे कहा कि वह इस तरह के आन्दोलन में शामिल होने दिसम्बर माह में भी आई थीं। जोगी मंडावी विधवा हैं, उनके 2 लड़के, एक लड़की और एक नाती भी हैं। उनके पास छोटे छोटे 3 खेत हैं जिनमें वे 7/8 खंडी धान उगा लेते हैं यानी कुल मिलाकर 20/22 बोरी धान का उत्पादन कर लेते हैं। जंगल से भी कई चीजें इकट्ठा कर लेते हैं। जोगी मंडावी ने अपने गाँव के पानी की समस्या के बारे में भी कहा कि वह पानी लाल है। गौरतलब है कि इस क्षेत्र में खदानों के चलते कई नदी, नालों के पानी प्रदूषित हो गए हैं और पीने लायक नहीं बचे हैं, जिसे लेकर लोगों में दुःख और गुस्सा है।

इस आन्दोलन में शामिल होने आये कुछ युवक-युवतियों में से एक आयतो कुंजामी ने हमसे बात करते हुए अपने गुस्से का इजहार किया–हम यहाँ नंदराज पहाड़ी को बचने आये हैं। हमें पूरा कारखाना बंद कराना है, क्योंकि इन कारखानों से हमें कोई फायदा नहीं मिल रहा है। एनएमडीसी इतने साल से इधर है, यहाँ आदिवासियों को न कोई नौकरी मिल रही है और न कोई सुविधा। हमारा पानी, जमीन सब बर्बाद हो रहा है। यह पहाड़ हम आदिवासियों का है, इसमें हम और हमारे देवी-देवता निवास करते हैं और ये खदान पहाड़ों को खत्म कर रही है। इसलिए हम अदानी के साथ एनएमडीसी को भी भगाना चाहते हैं। उनके साथ आई एक लड़की, जो अपना नाम नहीं बताना चाहती थी ने कहा कि हम लोग खेती करते हैं, धान और मक्का उत्पादन करते हैं और बाकी समय में जंगल से लकड़ी, महुआ, पत्ता और दूसरी कई चीजें लाते हैं, लेकिन पहाड़ ही नहीं होगा और जंगल ही नहीं होगा तो हम कैसे जियेंगे? वहीं साथ में आये पार्षद जो अपना नाम नहीं बताना चाहते हैं, ने कहा–हमारे पर्यावरण और प्रकृति का नुकसान हो रहा है। उसके साथ-साथ हमारी आदिवासी संस्कृति और आजीविका भी संकट में है। यहाँ खदान होने से हमें कोई फायदा नहीं हुआ है, बल्कि यह हमारे लिए मुसीबत और संकट बन गयी है।

अब यह आन्दोलन धीरे-धीरे जोर पकड़ने लगा है। राजनीतिक दल भी इनका समर्थन करने आगे आ रहे हैं। धरने के दूसरे दिन धरना स्थल पर पूर्व मुख्यमंत्री अजित जोगी पहुंचे और आन्दोलनकारियों को अपना समर्थन देते हुए आदिवासियों की आस्था के स्थल नन्दराज से लीज वापस करने की मांग की है। वह नंदराज पर्वत भी गये और पूजा अर्चना भी की। उन्होंने कहा कि जैसे राम मंदिर हिन्दुओं की आस्था का स्थल है, वैसे ही नन्दराज पहाड़ एक देव स्थान है, इसलिए यह आदिवासियों की आस्था और श्रद्धा का स्थल है। यहाँ हम उत्खनन नहीं होने देंगे। इस आन्दोलन में शामिल हुई आदिवासी नेता और सामाजिक कार्यकर्ता सोनी सोरी ने कहा कि मैं खुद आदिवासी हूँ और ये सब मेरे आदिवासी भाई-बहन हैं। ये जंगल, जमीन हमारे हैं और इसलिए हम लोग लड़ रहे हैं। नंदराज पहाड़ को लेकर बात हो रही है, यह हमारी आस्था की बात है। साथ ही, हमारे जल, जंगल और जमीन को माइनिंग के नाम पर जिस तरह से नष्ट किया जा रहा है, पेड़ों और चट्टानों को काटा जा रहा है, इससे हमारे आदिवासियों का जीवन खत्म हो सकता है, इसलिए हमें यह जल, जंगल और जमीन चाहिए, इसके सिवा कुछ नहीं चाहिए।

सोनी सोरी ने आगे कहा कि यह एक बार का आन्दोलन नहीं है, इस तरह से कई बार लोग एक जुट होकर अपनी बात रखने के लिए बाहर आते हैं। तो इस बार ज्यादा संख्या में लोग आये हैं। इससे यह लग रहा है कि हर आदिवासी दिल से इस बात को लेकर जागरूक है कि वह अपना जल, जंगल, जमीन नहीं देगा, खासकर नंदराज पहाड़ी को लेकर वे काफी संवेदनशील हैं। नंदराज पहाड़ी में हजारों साल से पूजा पाठ होता आया है, हमारे पूर्वज भी पूजा पाठ करते आये हैं और आज की नई पीढ़ी भी इस बात से वाकिफ है। इसलिए इस बात का सबको दर्द है कि हमको कुचला जा रहा है। साथ साथ वे हमारे देवी-देवताओं को भी कुचल रहे हैं। हम जान दे देंगे, अपना खून बहायेंगे पर हमारे जल, जंगल, जमीन और मानवता को खत्म करने की साजिश को हम कामयाब नहीं होने देंगे।

गौरतलब है कि बैलाडीला डिपोजिटी-13 में 315.813 हैक्टेयर रकबे में लौह अयस्क खनन के लिए वन विभाग ने वर्ष 2015 में पर्यावरण क्लीयरेंस दिया है। जिस पर एनएमडीसी और राज्य सरकार को संयुक्त रूप से उत्खनन करना था। इसके लिए राज्य व केंद्र सरकार के बीच हुए करार के तहत संयुक्त उपक्रम एनसीएल बनाया गया था। लेकिन अब इसे अदानी की निजी कंपनी को 25 साल के लिए लीज पर हस्तांतरित कर दिया गया है। इस रकबे में 25 करोड़ टन लौह अयस्क मौजूद होने की बात कही जा रही है। सरकार और कंपनी पर यह भी आरोप है कि अदानी ग्रुप ने सितम्बर 2018 में कंपनी बनाई और दिसम्बर 2018 में ही केंद्र सरकार ने इस कंपनी को यह लीज दे दी। ❑

जंगल के लुटेरों को ही मिली है पर्यावरण बचाने की जिम्मेदारी

❑ मुनीश कुमार

भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा प्रस्तावित शैतानी कानून-वन अधिनियम 2019 के तार 2015 में ग्लोबल वार्मिंग को लेकर पेरिस में जलवायु परिवर्तन पर किये गये समझौते से जुड़े हुए हैं। 2015 से अस्तित्व में आए पेरिस समझौते पर अक्टूबर 2016 तक दुनिया के 191 देशों ने हस्ताक्षर किए हैं। भारत सरकार ने प्रस्तावित नये वन अधिनियम 2019 की प्रस्तावना में जलवायु परिवर्तन और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए इस अधिनियम को लाए जाने का उल्लेख किया है। इस कानून की धारा 27 (ए) में कहा गया है कि राज्य सरकार, सरकारी गजट की अधिसूचना जारी करके किसी भी क्षेत्र को कार्बन संरक्षण के उद्देश्य के लिए कानूनी रूप से संरक्षित क्षेत्र घोषित कर सकती है।

पेरिस समझौते में दुनिया को गर्म होने से बचाने के लिए वर्ष 2100 तक दुनिया का तापमान औद्योगिक क्रांति से पूर्व के स्तर से 2 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक नहीं बढ़ने देने व 1.5 डिग्री तापमान बढ़ोतरी की आदर्श स्थिति को प्राप्त करने की बात कही गयी है। वनों के अंधाधुंध कटान, हथियारों की अंधी दौड़, औद्योगीकरण व जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल आदि से उत्सर्जित कार्बन डाई आक्साइड तथा अन्य जहरीली ग्रीन हाउस गैसों के कारण पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है। पृथ्वी पर उसकी क्षमता से अधिक मात्रा में मौजूद ग्रीन हाउस गैसों के कारण सूर्य से आने वाली ऊष्मा पृथ्वी के तापमान में बढ़ोत्तरी कर रही है।

पृथ्वी के तापमान को कम करने के लिए जरूरी है कि जीवाश्म ईंधन के प्रयोग व उद्योगों से निकलने वाली ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम किया जाए, हथियारों की दौड़ समाप्त की जाए तथा दुनिया में वन क्षेत्रों को बढ़ाया जाए, ताकि पर्यावरण के लिए विनाशकारी इन गैसों को सोखा जा सके। पर्यावरण को बचाने के लिए 2015 में पेरिस में हुई 21वें दौर की वार्ता में दुनिया के देशों के बीच एक समझौता अस्तित्व में आया। पेरिस समझौते में शामिल विकसित व विकासशील देशों ने अपने राष्ट्रीय तौर पर निर्धारित योगदान प्रस्तुत किए, जिसमें उन्होंने बताया कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए वे क्या करेंगे। पेरिस समझौते में शामिल देशों द्वारा जो एनडीसी प्रस्तुत किए गये हैं, उन्हें लागू करना सभी देशों के लिए बाध्यकारी है।

इस समझौते में अमेरिका ने राष्ट्रीय तौर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) के अंतर्गत कहा कि वह अपने देश द्वारा किए जा रहे कार्बन उत्सर्जन में वर्ष 2025 तक वर्ष 2005 के स्तर के मुकाबले 25 से 28 प्रतिशत की कटौती करेगा। चीन वर्ष 2030 तक अपने देश द्वारा किए जा रहे कार्बन उत्सर्जन में वर्ष 2005 के स्तर से 60 प्रतिशत तथा यूरोपीय यूनियन के देश वर्ष 1990 के कार्बन उत्सर्जन के लेबल से 40 प्रतिशत कम कार्बन उत्सर्जन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसी तरह से दुनिया के दूसरे मुल्कों ने भी अपने-अपने एनडीसी निर्धारित किए हैं।

भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्री ने 4 जनवरी, 2019 को लोकसभा में बताया कि पेरिस समझौते के तहत भारत 2030 तक वर्ष 2005 के स्तर से 33 से 35 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन में कटौती करेगा। इस समझौते के तहत देश में वर्ष 2030 तक जीवाश्म ईंधन (कोयला, पेट्रोलियम आदि) के उपयोग में 40 प्रतिशत की कटौती की जाएगी। देश में 2030 तक वन व वृक्ष क्षेत्र को बढ़ाकर 2.5 अरब से 3 अरब टन ग्रीन हाउस गैस (कार्बन) को सोखने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के प्रयासों के कारण विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ने वाले नकारात्मक असर की भरपाई के लिए दुनिया के उच्च आय वाले 18 विकसित देश, हरित जलवायु कोष बनाकर, विकासशील देशों को वर्ष 2020 के बाद से प्रतिवर्ष 100 अरब डालर की मदद देंगे। पेरिस समझौते में प्रावधान है कि 3 वर्ष की अवधि के बाद कोई भी देश स्वयं को इस समझौते से अलग कर सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प 2017 में पेरिस समझौते को अमेरिका के खिलाफ बताकर इससे अलग होने का ऐलान कर चुके हैं। वे हरित जलवायु कोष में 3 अरब डालर सालाना देने के अमेरिका द्वारा किए गये वायदे से भी मुकर गये हैं। पेरिस समझौते की धारा 6 में कार्बन ट्रेडिंग को वैधता प्रदान की गयी है। कार्बन ट्रेडिंग के लिए कार्बन की यूनिट का निर्धारण टन में किया गया है।

इस कार्बन ट्रेडिंग का मतलब यह है कि यूरोप व जापान जैसे अमीर साम्राज्यवादी देशों के उद्योग-धंधों व 'विकास' के फलस्वरुप जो कार्बन उत्सर्जन होगा उसे सोखने के लिए भारत जैसे देशों में कार्बन क्रेडिट हासिल करने के लिए जंगल लगाए जाएंगे। वे विकास करेंगे और हम गरीब देशों के लोग विकसित साम्राज्यवादी मुल्कों के विकास का दंश झेलेंगे। उन्होंने दुनिया के पर्यावरण को बचाने का सारा बोझ गरीब देशों की जनता के ऊपर डाल दिया है। 1992 में ब्राजील के रियो में दुनिया के पर्यावरण को बचाने के लिए शुरू की गयी वार्ताएं व विकसित देशों की प्रतिबद्धताएं खोखली साबित हुई हैं। **–जनज्वार**

अमेजन के वनों पर भी टूटा विकास का कहर

ब्राजील में बीते मई महीने में 739 वर्ग किलोमीटर अमेजन का जंगल काट डाला गया। अमेजन के जंगलों को दुनिया के सबसे घने वर्षा वनों में शामिल किया जाता है। यहां इतना पानी बरसता है कि जंगल हमेशा गीला ही रहता है। पेड़ों का चंदोवा इतना घना है कि सूरज की रोशनी जमीन तक नहीं पहुंच पाती। यह जंगल पृथ्वी की उन गिनीचुनी जगहों में शामिल है जो पूरी धरती के सांस लेने भर ऑक्सीजन पैदा करते हैं। लेकिन अब इसकी परवाह किसी को नहीं है। जनवरी में चुनकर सत्ता में आयी ब्राजील की नई घोर दक्षिणपंथी सरकार पैसा कमाने के लिए जंगल कटवाने में जुट गयी है। नया पर्यावरण मंत्रालय जंगलों को साफ करने के ठेके देने में जुटा हुआ है। यह खुलासा सेटेलाइट के जरिए की जा रही निगरानी से हुआ है। माना जा रहा है कि 2019 अमेजन के जंगलों के लिए बेहद बुरा साबित होने जा रहा है। इन जंगलों में सदियों से खड़े सैकड़ों साल पुराने वृक्ष, हजारों सालों से सरवाइव करने वाले जीव-जंतुओं की प्रजातियां, पूरा ईको सिस्टम और यहां तक कि पृथ्वी का जटिल श्वसन तंत्र ही खतरे में पड़ गया है।

दादा धर्माधिकारी : विचारों की क्रांति का एक बहता हुआ दरिया

❑ डॉ. शुभदा पाण्डेय

मेरे पिता यशवंत धर्माधिकारी दादा के द्वितीय पुत्र थे। वे जबलपुर में वकालत करने 1956 में आये थे। यहीं पर मेरा जन्म हुआ। दादा ने जबलपुर के हमारे घर का नाम 'सौहार्द्र' रखा था। यह घर सबके लिए खुला था। सर्वोदय से जुड़े सभी लोग हमारे घर पर आकर ठहरते थे। प्रेम और विश्वास का प्रतीक था 'सौहार्द्र'। हम सभी बच्चे उत्सुकता से दादा के अतिथियों का स्वागत करते थे। सब कुछ एक उत्सव जैसा था।

मेरी मां बताती थीं कि मेरे जन्म के समय जिस वस्त्र में मुझे लपेटा गया था, वो मेरे दादा की पुरानी मुलायम खादी की धोती थी। जिस धागे ने हमारे परिवार को बांधे और पिरोये रखा वह 'खादी' ही थी। दादा रोज चरखा चलाते थे। हम बच्चे बरामदे में उनके पास बैठकर कौतूहल से धागा बुनते दादा से गांधी, विनोबा और सर्वोदय की बातें सुना करते थे। वे विचारों की क्रांति का एक बहता हुआ दरिया थे। रोज एक नया विचार देते थे। खादी हमारे लिए सिर्फ कपड़ा नहीं था, वरन् एक जीवन मूल्य और दर्शन था।

जिस किराये के मकान में हम रहते थे, वहां रोज सुबह आंगन में एक तरफ से अजान सुनाई देती थी तो दूसरी ओर से आरती और घंटियों की आवाज। मैंने एक दिन दादा से पूछा, यह क्या है? सब अलग-अलग क्यों है? दादा बोले, यह हमारे देश की संस्कृति है। अपने जीवन में किसी को शामिल करना और किसी के जीवन में सम्मिलित होना ही संस्कृति है। अकेले जीना मनुष्य का स्वभाव नहीं है। वह मूलतः सामाजिक प्राणी है। इस परिभाषा को सुनकर मैंने कभी किसी धर्म में भेदभाव नहीं किया। सेक्यूलरिज्म का इससे सुंदर वर्णन कठिन है। बिना किसी नियम के सिर्फ प्रेम और सौहार्द्र से ही जिया जा सकता है। पुलिस की लाठी की इस व्यवस्था में जरूरत ही नहीं है। सद्भाव और आपसी भाईचारे से एकता अक्षुण्ण रह सकती है।

मैं कॉलेज से आकर अक्सर दादा के पास बैठ जाया करती थी। एक बार मेरी एक सहेली से अनबन हो गयी। मेरी उससे बातचीत बंद हो गयी। मैं इसी ऊहापोह में थी कि कैसे इस स्थिति से उबर सकूं। इस पर दादा बोले, कोई भी रिश्ता या संबंध अगर बोझ लगे, उसमें अगर माधुर्य समाप्त होता दिखे, तो संवाद से ही स्थिति सुलझ सकती है, आपसी मनमुटाव से नहीं। मैंने अपनी सहेली से बात की तो पता चला कि वह भी बहुत दुखी थी। छोटी-सी बात थी पर शायद उम्र भर की रुसवाई हो सकती थी। ऐसी अनेक बातें थी जो दादा के साथ बैठकर मैं और मेरी बहनें सुलझा लिया करते थे। दादा बहुत स्नेहित और शांत थे। मैंने उन्हें कभी उत्तेजित होते हुए नहीं देखा था। गलती करने पर समझाते थे, कभी डांटते नहीं थे।

दादा के कपड़े मैं धोया करती थी। सूखने के बाद तह कर उनके गद्दे के नीचे दबा दिया करती थी। दूसरे दिन वह प्रेस हो जाते थे। कितना आसान तरीका था। बिजली और श्रम दोनों की ही बचत। रोज नारियल तेल से मालिश और फिर कुनकुने पानी से स्नान, नियमित और संतुलित जीवन था। भोजन भी नपा तुला—दलिया, खिचड़ी, लौकी, दही और पापड़। हम बहनें स्कूल से डेढ़ बजे आती भी तो दादा हमें खाने की मेज पर बैठे हुए मिलते थे। स्कूल में आज क्या हुआ? से बातचीत और खाने का सिलसिला शुरू होता था। थाली पूरी साफ होने के बाद ही भोजन समाप्त हुआ करता था। इस अनुशासन का हम सबको पालन करना पड़ता था। जितना खा सकते हैं, उतना ही थाली में लेना चाहिए। 'अन्न और किसान दोनों का ही अपमान मत करो, इस वचन का पालन उम्र भर करने का व्रत लो। विनोबा जी के आश्रम में थाली में केवल पांच ही वस्तुएं परोसी जाती थी, जिसे समाप्त कर अपनी थाली धोकर रखनी होती थी। वहां की सादगीपूर्ण और अनुशासित जीवनशैली मुझे बहुत प्रभावित करती थी।

स्त्री के स्वातंत्र्य पर दादा से बहुत चर्चा होती थी। दादा कहते थे कि स्त्री जब तक चरित्र, निष्ठा और विवेक के बल से स्वरक्षित नहीं होगी, वह सुरक्षित नहीं होगी। जब तक वह पुरुष से सुरक्षा की अपेक्षा करेगी, वह उपेक्षित रहेगी। कर्तव्यनिष्ठ होने की उसे स्वयं ही जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी। स्त्री की समझ ही उसे आत्मनिर्भर बनायेगी। आज हम विज्ञापनों में स्त्री का उपयोग केवल बाजार मूल्य के लिए आंकते हैं। सुंदर होना यानी गोरा होना, स्त्री का मूल्य और उसका स्वरूप केवल बाजार में बिकने वाली वस्तु बनकर रह गये हैं। ऐसी स्थिति में स्त्रियों को अपना चरित्र और सामाजिक मूल्य स्वयं ही स्थापित करना होगा।

दादा मेरी दादी मां को मालकिन कहकर संबोधित करते थे। जब मैंने पूछा ऐसा क्यों दादा, तो बोले—''उसके पिता ने मुझे दहेज देकर खरीद लिया है, जब विवाह हुआ तब कुछ कह पाने का सामर्थ्य नहीं था। मेरे पिता ने विवाह करवा दिया। उस दिन से मैं उसे मालकिन ही कहता हूं क्योंकि मैं उसका सेवक बन गया।'' स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के आवाहन पर दादा ने अपना सब कुछ त्यागकर मूलतापी से वर्धा का रुख किया। मेरी दादी और बच्चे भी उनके साथ वर्धा आ गये। दादा बताते थे कि स्कूल में अध्यापन का कार्य करते हुए उन्होंने बजाजवाड़ी में रहकर आंदोलन में सतत काम किया। जमनालाल बजाज का स्नेह और सहयोग उन्हें प्राप्त हुआ और वे सर्वोदय से जुड़ गये। विनोबाजी के साथ भूदान में पदयात्राएं करते रहे। गांव-गांव जाकर लोगों से मिलकर भूदान का यज्ञ साकार किया।

दादा हम पोतियों पर बहुत स्नेह रखते थे। उन दिनों अंतर्जातीय विवाह बहुत कम होते थे। दादा हम सबसे कहते थे कि असली सेक्यूलरिज्म आपसी मेलजोल से ही संभव है। हम सबने अंतर्जातीय विवाह किये और दादा के संस्कारों के साथ निभाने की पूरी चेष्टा भी की।

हम सब धन्य हैं कि 'दादा' हमारे दादा थे। इतनी विनम्रता और सरलता एक अद्भुत गुण है। कोई अहंकार नहीं, कोई अधिकार नहीं। दादा अपने साथ एक डब्बे में होमियोपैथी की दवाइयां रखते थे। दादा के पास हर मर्ज की दवा थी। पांच छोटी सफेद गोलियों में जैसे सब कुछ ठीक हो जाता था। हम सब उसे

'दादा के नुस्खे' कहते थे।

दादा ने मुझे कुछ शब्द सिखाये थे और उनका गूढ़ रहस्य भी समझाया था। पहला शब्द था 'स्वावलंबन'—स्वयं पर निर्भर रहो और अपना काम स्वयं करो। इसमें भावनाओं का भी स्वावलंबन जुड़ा हुआ था। हम किसी और पर निर्भर न होकर आत्मनिर्भर रहें। दूसरा शब्द था संवेदना। आपसी संवेदना से सब झगड़े और समस्याएं सुलझ जाती हैं। संवाद एक मजबूत जरिया है। आपसी स्नेह, प्रेम और अनुराग से सब समस्याओं का अंत हो सकता है। दादा की विचारधारा अविरल हमारे घर में बहती थी। समय के अनुरूप स्वयं को कैसे ढालना है, यह दादा ने ही हमें सिखाया था।

बिहार का एक किस्सा मुझे याद आ रहा है। उन दिनों जयप्रकाश नारायण का समग्र क्रांति आंदोलन जारी था। दादा को गांधी ग्राम में 150 युवकों के शिविर में व्याख्यान देना था। ट्रेन से दादा और मैं पटना के लिए निकले। आरा स्टेशन पर करीब 50-60 युवक बिना टिकट जोर जबरदस्ती हमारे डिब्बे में आ गये। मैं गुस्से से खड़ी हो गयी लेकिन दादा खिसककर एक कोने में बैठ गये। लड़कों का झुण्ड आपस में जोर-जोर से बातें करने लगा, जब मैंने उनके मुंह से समग्र क्रांति सुना तब लगभग चीखकर कहा, यह बुजुर्ग जो कोने में बैठे हैं, वह दादा धर्माधिकारी हैं, 'जेपी' के आंदोलन के विचारक। लड़के सकपका गये। सबने उठकर दादा को प्रणाम किया और माफी मांगने लगे। हमको हमारी जगह देकर वे इधर-उधर चले गये। मैं बहुत उत्तेजित थी। दादा ने शांत स्वर में मुझसे कहा—'यह दिशा रहित नहीं, दिशा भ्रमित हैं, इनसे कैसी नाराजगी।' मैं बहुत देर तक सोचती रही की जीवन में सही दिशा का होना कितना महत्त्वपूर्ण है। सही विचार और संकल्प कितने आवश्यक हैं। आज उस घटना को याद करती हूं तो हैरानी होती है।

एक बार कॉलेज के कुछ विद्यार्थी दादा के पास आये और 'समग्र क्रांति' पर चर्चा करने लगे। दादा ने बताया कि क्रांति के तीन सूत्र हैं। पहला है—'सामाजिक प्रार्थना'। आपसी क्लेश और भेदभाव मिटाकर साथ में बैठकर ईश्वर और सत्य का स्मरण। इसमें जाति या प्रांत का कोई अलगाववाद नहीं, कोई मनमुटाव नहीं। दूसरा है झाड़ू—यानी सामाजिक बुराइयों का अंत। मन को और समाज को साफ कर एक ऐसे समाज की संरचना करना जहां पर कोई बुराई वास ना करे। तीसरा है—'चरखा', उत्पादक श्रम और स्वावलंबन का द्योतक। हर घर में चरखा रहे और हर महिला सूत कातकर स्वावलंबित हो। अपनी और अपने घर की आय में वह भी योगदान दे। दादा कहते थे कि महिला करुणा और प्रेम की मूर्ति होती है। त्याग और बलिदान उसके जीवन में ही निहित है। ऐसे में अगर वह शिक्षित होकर समाज की सेवा करे तो वह सर्वश्रेष्ठ सेवा रहेगी। अहिल्या और झांसी की रानी के उदाहरण देकर वे हमें रोज प्रेरित करते थे। सुबह और शाम टहलते समय कविताओं का पाठ भी होता था। खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी—यह मेरी प्रिय कविता थी। उसे पढ़ते हुए मैं स्वयं को भी पराक्रमी समझती थी। दादा के साथ गुजारे समय को मैं अपने जीवन का स्वर्ण काल मानती हूं। दादा के जीवन से जो भी पाया, उसे अपने जीवन में उतार सकूं, यही ईश्वर से मेरी विनम्र प्रार्थना है। ❑

मौत का आर्त्तनाद और सुशासन की बंसी

❑ अरविन्द अंजुम

बिहार का मुजफ्फरपुर विगत कई बरसों से लगातार चर्चा में है। पहले तो शेल्टर होम में महिलाओं/बच्चियों के साथ यौन उत्पीड़न व हत्या का सनसनीखेज मामला सामने आया तो अब एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिन्ड्रोम उर्फ चमकी बुखार से 150 से भी ज्यादा बच्चों की मौत का मसला सामने है। उधर बिहार के दक्षिणी हिस्से में लू का कहर 100 से ज्यादा लोगों को अपने आगोश में लेकर मौत की नींद सुला चुका है। इस तरह बिहार में मौत का तांडव चल रहा है।

मुजफ्फरपुर में बच्चों की मौत के बाद राज्य व केन्द्र के स्वास्थ्य मंत्री और सूबे के मुख्यमंत्री का दौरा हुआ। बाढ़ की तबाही, सूनामी की त्रासदी जैसी घटनाओं के समय आकाओं द्वारा हवाई मुआयना करने का रोमांचक प्रचलन चल रहा है। पता नहीं इससे किस प्रकार की तृप्ति मिलती है। नेताओं ने मुजफ्फरपुर जाकर मौत के कहर का मुआयना किया और फिर सबने व्यवस्था सुधारने की कुछ घिसी-पिटी घोषणाएं कीं।

इस बीच चमकी बुखार से होने वाली मौतों की वजहें बताने का सिलसिला भी काफी दिलचस्प है। जो लीची मुजफ्फरपुर की पहचान है, उसी पर ठीकरा फोड़ा जा रहा है। खाली पेट बच्चों द्वारा लीची खाने को इसकी वजह बताया जा रहा है। कोई इसका कारण 4जी अर्थात् गांव, गरीबी, गंदगी व गर्मी बता रहा है। मार्केट में कई थ्योरी आ गयी है। कोई यह नहीं कह रहा है कि अपर्याप्त स्वास्थ्य संस्थान व सुविधा के चलते मौत का यह कहर बरपा है।

इस पूरे मामले में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के स्वनामधन्य पत्रकारों का रवैया हतप्रभ करने वाला है। एक एंकर इलाजरत बच्चों के आईसीयू में कैमरा, माइक लेकर घुस जाती है और चीख-चीखकर जो सवाल मंत्री-मुख्यमंत्री से पूछने चाहिए, डॉक्टरों से पूछने लगती है। यह मीडिया में पसर रही संवेदनहीनता और मुसीबतों को तमाशा बना देने की प्रवृत्ति का वीभत्स नमूना है।

मरीजों का इलाज करने वाले चिकित्सक अत्यंत धैर्य व मनोयोग से बच्चों का इलाज कर रहे हैं। इस संकटपूर्ण स्थिति का मुकाबला सिर्फ समर्पण भाव से ही हो सकता है। ये वे चिकित्सक हैं जिन्हें इस तरह के कामों में ही झोंका जाता है। इन चुनिन्दा चिकित्सकों को छोड़ बाकी तो सब मलाईदार जगहों पर जमकर बैठे रहते हैं। एक चिकित्सक ने तो बता ही दिया कि 4 प्रकार की दवाइयों में से एक ही दवा उपलब्ध है। पक्का कर लें—गुबार गुजर जाने के बाद उस डॉक्टर को इस बयान की कीमत चुकानी पड़ेगी।

पिछले तीन दशकों से सामाजिक न्याय, सुशासन, समावेशी विकास और सबका साथ, सबका विकास जैसे मनमोहक नारों पर सवार होकर गैर वामपंथी सभी दलों ने बिहार की जनता की 'अपूर्व' सेवा की है, जिसका परिणाम बेमौत मरने वालों के परिजन भोग रहे हैं। गैर जिम्मेवारी, क्रूरता व पाखंड का यह सिलसिला तो तभी थमेगा जब जनता विकृतियों से मुक्त होकर लगाम खुद थाम ले। ❑

लोक-विमर्श

मुसहरी सत्याग्रह का स्वर्ण जयंती वर्ष

अमन, चैन, विकास और बेहतर जीवन, बेहतर दुनिया के वायदे करती हुई सरकारें आती हैं, चली जाती हैं, लेकिन मानवता के कुछ दृश्य स्थायी हो गये हैं— गरीबी बढ़ती जाती है, उम्मीदें घटती जाती हैं, सरोकार पूरे नहीं होते और हिंसा का बोलबाला है। दुनिया भर की सरकारें धरती पर जहां-तहां जारी संगठित हिंसा का प्रतिकार प्रतिहिंसा के जरिये करने की असफल कोशिशों में लगी रहती हैं। लेकिन न तो हिंसा रुकती है, न गरीबी घटती है, न दुनिया में कहीं अमन चैन दिखता है। यह उल्टा दृश्य सीधा हो सकता था, अगर हमने सही रास्ता पकड़ा होता; और भारत के संदर्भ में सीधा रास्ता गांधी मार्ग से अलग भला क्या होता? गांधी ने कहा था कि भारत के गांव, गांव नहीं रह गये हैं, गोबर के ढेर हो गये हैं। लेकिन इन्हीं गांवों के विकास में उन्होंने भारत का भविष्य भी देखा था और एक-एक गांव की गणराज्य के रूप में कल्पना की थी। इन छोटी, किन्तु स्वायत्त, स्वाश्रयी इकाइयों में उन्होंने सच्चे स्वराज्य की सम्भावना देखी थी। नेहरू ने इन गांवों में कुछ दूसरा ही देखा। उन्होंने 'भारत की खोज' के क्रम में इन्हें अतीत के बोझ से दबा पाया और नियति के अनुसार नयी, शहरी, औद्योगिक रचना में विलीन होते देखा।

1951 में जब विनोबा पदयात्रा पर निकले तो उन्हें 'स्वतंत्र भारत के गुलाम गांवों' में सह-अस्तित्व की प्राचीन व्यवस्था के बचे-खुचे संस्कार मिले और मिले जीवनी-शक्ति के कुछ गुप्त स्रोत, जिन्हें उन्होंने 'दान' से जगाया और क्रांति-प्रवाह के साथा जोड़ा। उनके क्रांति-दर्शन में एक बार फिर गांव अपना खोया हुआ 'स्व' वापस पाकर गांधी के सच्चे स्वराज्य यानी ग्राम-स्वराज्य का वाहक बन गया।

लेकिन ग्राम-स्वराज्य तक तो गांव को चलकर पहुंचना था; आज वह कहां है? जहां उसे जाना है, उस ओर वह बढ़ क्यों नहीं रहा है? कहां रुका हुआ है क्रांति का प्रवाह और कहां छिपी हुई है गांव की जीवनी-शक्ति? वह प्रकट क्यों नहीं होती? क्यों भारत के ये लाखों गांव प्रगति और परिवर्तन की ओर न बढ़कर हिंसा और प्रतिहिंसा के दुश्चक्र में फंसते जा रहे हैं? यही प्रश्न जेपी के मन में थे, जब वह जून, 1970 में मुजफ्फरपुर के मुसहरी-प्रखण्ड में पहुंचे। वहां जाकर वह गांव में बैठ गये; घर-घर जाने लगे; एक-एक व्यक्ति को कुरेदकर उसकी मनुष्यता को और उसके जीवन की वास्तविकता को नजदीक से देखने लगे। क्या देखा उन्होंने? देखा यही कि गांव क्या है, 'दुर्योधन का दरबार' है। इस दरबार में प्रतिदिन द्रौपदी का चीर-हरण होता है और उसे धर्मराज से लेकर पितामह भीष्म, गुरुवर द्रोणाचार्य और महाज्ञानी विदुर बैठे देखते रहते हैं। कोई कहता तक नहीं कि यह क्या हो रहा है?

स्वतंत्रता के बहत्तर वर्षों बाद भी गांव की इस स्थिति में कोई अंतर नहीं पड़ा है। धर्म हार गया, कानून निरर्थक सिद्ध हुआ और अंतरात्मा जैसी चीज तो रह ही नहीं गयी। गांव, गांव नहीं, जंगल हो गये हैं, जिनमें जंगल का न्याय चलता है।

बातें ये कुछ नयी नहीं हैं, बल्कि इतनी परिचित हैं कि हमारी आंखें अब उन्हें देख नहीं पातीं और दिमाग परख नहीं पाता। जेपी ने गांव के जीवन की ऊपर की सब परतें हटाकर देखा, कानून, प्रशासन, पंचायत, विकास, ग्रामदान आदि सबके पर्दे हटाकर उसका प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया। उन्होंने सूखा रिसर्च नहीं किया, बल्कि मौलिक प्रतिभा से जीवन की वास्तविकता की खोज की। उन्होंने जो देखा, परखा, उसे जैसे का तैसा लिख दिया। उन्होंने हमें देखने की नयी आंखें दी, ताकि हम नये सिरे से अपने गांवों और उनमें बसने वाले भारत को देख लें। वास्तविकता सचमुच कितनी भीषण है।

इस भीषण वास्तविकता का उत्तर किसके पास है? क्या सत्ता की सौदागरी करने वाले नेताओं के पास है, जो मान लेते हैं कि उनकी कुर्सी और कानून के पास जनता के सब सवालों के जवाब हैं? क्या प्रशासकों के पास है, जिनकी फाइलें बढ़ती जाती हैं और समस्याएं जहां की तहां पड़ी रहती हैं? क्या पिस्तौलधारी आतंकवादियों के पास है, जो कटे हुए कुछ सिरों को गिनकर खुश हो लेते हैं कि उनके सपनों का समाज बन रहा है?

5 जून 1970, वह दिन था जब इन सवालों से जूझने के लिए अपनी सारी योजनाएं जहां की तहां छोड़कर जेपी मुसहरी प्रखण्ड में जाकर बैठ गये और तय किया कि या तो यह काम पूरा होगा या मेरी हड्डियां गिरेंगी। उन्होंने कहा कि चाहे जितनी गिरफ्तारियां हों, और गोलियां चलें, नक्सलवादी हिंसा तब तक नहीं दबायी जा सकती, जब तक कि जड़ से रोग दूर करने का उपाय भी साथ-साथ नहीं होता।

यह मुसहरी क्रांति का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है। 5 जून 2020 को 50 वर्ष पूरे हो रहे हैं। आप जहां भी हैं, इस सिलसिले में कुछ न कुछ कार्यक्रम अवश्य आयोजित करें और उसकी रिपोर्टिंग भी करें। सभी लोकसेवकों, सर्वोदय मित्रों और सर्वोदय मंडलों को इस काम में जुटना चाहिए और इस स्वर्ण जयन्ती वर्ष को अविस्मरणीय यादगार वर्ष में तब्दील करने की कोशिश करनी चाहिए। ❑

भारत छोड़ो दिवस पर 9 अगस्त को वाराणसी में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

देश को राजनीतिक आजादी मिलने के आज 72 साल बाद भी ऐसा महसूस किया जा रहा है कि लोकतंत्र का लोक कहीं पीछे छूटता जा रहा है और अपने पूरे वजन के साथ तंत्र लोक पर हावी होता जा रहा है। जाहिर है कि जन-आजादी का प्रश्न सात दशक बाद भी अनुत्तरित ही रह गया है। इसी विचार परिप्रेक्ष्य में विशद चर्चा के लिए आगामी 9 अगस्त 2019 को सर्व सेवा संघ परिसर राजघाट, वाराणसी में भारत छोड़ो दिवस के उपलक्ष्य में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी का मुख्य विषय होगा 'आजादी की लड़ाई : तब और अब'।

इस संगोष्ठी में देशभर से विचारकों, विद्वानों तथा गांधीजनों की भागीदारी होगी। दिनभर की संगोष्ठी के बाद संध्या 5 बजे से राजघाट से टाउनहाल तक एक शांति जुलूस भी निकाला जायेगा। जुलूस का समापन गांधी प्रतिमा के नीचे सर्वधर्म प्रार्थना सभा के साथ होगा। इस सूचना के माध्यम से आप से भी आग्रह है कि 9 अगस्त के कार्यक्रम में यथासंभव भाग लें और अपने विचार-विश्लेषण से संगोष्ठी को समृद्ध करें।

–स. ज. प्रतिनिधि

गतिविधियां एवं समाचार

नसीर अहमद को अध्यक्ष व संजीव श्रीवास्तव को महामंत्री पद की सौंपी गयी जिम्मेदारी

जिला सर्वोदय मण्डल उन्नाव की वार्षिक बैठक गत दिनों जिला कार्यालय विनोबा नगर में जिला अध्यक्ष राम शंकर भाई की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई, जिसमें शराबबन्दी को लेकर कानपुर में आयोजित धरना प्रर्दशन में शामिल होने का निश्चय किया गया। बैठक में 2019-2020 की नई कार्यकारिणी का गठन करने का भी निर्णय लिया गया। प्रख्यात शिक्षाविद नसीर अहमद को जिला सर्वोदय मंडल का नया अध्यक्ष चुना गया। बैठक में संजीव श्रीवास्तव महामंत्री, रामसजीवन यादव उपाध्यक्ष तथा अखिलेश तिवारी मंत्री चुने गये। मयंक आलोक को मीडिया प्रमुख तथा मजहर हुसैन व अनुपम को सहमीडिया प्रभारी का कार्यभार सौंपा गया। निर्तमान अध्यक्ष रामशंकरभाई, रघुराज सिंह व सुखदेव सिंह यादव को कार्यकारिणी में शामिल किया गया।

बैठक में अभी हाल में कुछ सिरफिरे तत्वों द्वारा राष्ट्रपिता के प्रति की गयी अशोभनीय टिप्पणी की कड़ी निन्दा की गयी तथा राष्ट्रपति से यह मांग की गयी कि ऐसे तत्वों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाये जिससे वे भविष्य में ऐसा कुकृत्य न कर सकें। बैठक में जनपद में बहुत जल्द शराबबन्दी के खिलाफ एक व्यापक जनसंघर्ष करने का भी निश्चय किया गया। सभा में सर्वोदय मंण्डल के कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों ने कार्यों की समीक्षा की तथा मंत्री संजीव श्रीवास्तव ने सर्वोदय मण्डल के कार्यों की प्रगति आख्या प्रस्तुत की।

–मयंक आलोक

लोकनायक जयप्रकाश स्मारक गोष्ठी

लोकनायक जयप्रकाश स्मारक संस्थान आरा के तत्वावधान में 44 वें संपूर्ण क्रांति दिवस का आयोजन किया गया. लोकनायक के स्मारक पर 1974 आन्दोलन के सक्रिय साथी, शहर के गणमान्य नागरिक एवं नौजवान साथी उपस्थित हुए. कार्यक्रम के प्रारंभ में लोकनायक की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया एवं श्रद्धांजलि अर्पित की गयी. संस्थान के महासचिव सुशील कुमार ने 1975 में जयप्रकाश नारायण द्वारा उद्घोषित संपूर्ण क्रांति के सिद्धान्तों पर विस्तार से प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि संपूर्ण क्रांति कि परिणामों को सिर्फ सत्ता के आइने में देखना गलत है. 1977 के बाद इस धारा के द्वारा देश भर में कई सफल जनान्दोलन और प्रयोग हुए हैं. इन आन्दोलनों में बोधगया का शांतिमय भूमि संघर्ष, उड़ीसा का गंदमार्दन आन्दोलन, गुजरात में नर्मदा बांध के विस्थापितों का आन्दोलन और महाराष्ट्र के धुलिया जिले का खेतिहर मजदूर आन्दोलन राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित रहे हैं.

समारोह एवं गोष्ठी का संचालन संस्थान के महासचिव सुशील कुमार और धन्यवाद ज्ञापन सचिव दीपक श्रीवास्तव ने किया.

–सुशील कुमार

एक पाठक का मनोगत

मुझे इस बात का समाधान है कि मेरे जीवन में प्राप्तव्य कुछ भी शेष नहीं रहा है। जो कुछ प्राप्त करना था, वह प्राप्त हो गया है। फिर भी शरीर शेष है तो जो कुछ काम उससे बनेगा, वह बने। कर्तव्य शेष नहीं— तस्य कार्य न विद्यते। यह बहुत बड़ा समाधान है, मेरे चित्त में। किसी प्रकार की चिन्ता चित्त में नहीं है। चिन्तन चलता है, वह अलग बात है। अब तो सिर्फ प्रारब्ध क्षय की राह देखता रहता हूं। सबको प्रणाम! **–विनोद शंकर पाण्डेय**

कठपुतली से गांधी दर्शन को किया जीवंत

एक मार्च से आईआईटी बीएचयू के छात्रों के नेतृत्व में बनारस से चली सद्भावना यात्रा यूपी के 75 जिलों में कठपुतली नाटक का मंचन करते हुए गांधीजी के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प पूरा कर रही है। इसी क्रम में बापू स्मारक इंटर कॉलेज परिसर में कठपुतली नाटक का मंचन किया गया, जिसमें गांधीजी की पूरी जीवनी पर विस्तृत प्रकाश डाला गया।

इस अभियान के जरिये महात्मा गांधी का जीवन संदेश जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है, ताकि गांधीजी के लोक कल्याण के संदेश घर-घर में जाएं और आज के भागम-भाग भरे जीवन में सुख और शांति की स्थापना हो। कठपुतली नाटक अभियान से जुड़े कार्यकर्ताओं ने अनेक गांवों में जाकर महात्मा गांधी के जीवन-दर्शन को कठपुतली के माध्यम से जीवंत किया है।

–मिथिलेश दुबे

असंगठित कामगारों के लिए एकदिवसीय कार्यशाला

वाराणसी समुदाय विकास समिति, एम ट्रस्ट और आईजीएसएसएस, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 'सरकारी नीतियां और वाराणसी के असंगठित कामगार' विषयक एक दिवसीय गोष्ठी और कार्यशाला संपन्न हुई। 10 जून को विनोबा सभागार में आयोजित इस कार्यशाला में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की ज्यादा भागीदारी दर्ज की गयी। कार्यशाला को संबोधित करते हुए श्रमिकों के अधिकारों के लिए सतत संघर्षशील भाई मुहम्मद आरिफ ने कहा कि देश में नीतियों की कमी नहीं है, कमी नीतियों के मुताबिक बरतने में है। व्यवस्था से टकराने और परिणाम पाने के लिए उन्होंने संगठन की आवश्यकता पर जोर डाला। कार्यशाला को संबोधित करते हुए सर्वोदय जगत के सह संपादक प्रेम भाई ने बारडोली सत्याग्रह का दृष्टांत सुनाया और बताया कि कैसे सामाजिक आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका पुरुषों की तुलना में अधिक प्रभावशाली होती है। कार्यक्रम में सर्व सेवा संघ परिसर की संयोजक शीलम बहन ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन दीपचन्द्र कश्यप ने किया। कार्यक्रम में एम ट्रस्ट के अमित कुमार भी उपस्थित थे।

–शमां परवीन

वनाधिकार संशोधन रद्द करने की मांग

लक्ष्मी आश्रम कौसानी में भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा वन अधिनियम में किये जाने वाले संशोधन प्रस्तावों पर विस्तार से चर्चा की गयी। चर्चा में इन प्रस्तावों को वन अधिकारियों, पुलिस तथा राजस्व विभाग के अधिकारियों को वनाश्रितों का दमन व उत्पीड़न करने तथा उन्हें वनों से बेदखल करने के असीमित अधिकार देने वाला

पाया गया। बैठक में सर्वसम्मति से इन प्रस्तावित संशोधनों को पूर्णरूप से अस्वीकार कर दिया गया तथा इन्हें जन विरोधी करार देते हुए बैठक में राज्य सरकार से माँग की गयी कि वह केन्द्र सरकार से प्रस्तावित संशोधनों को पूर्ण रूप से रद्द करने की माँग करे। प्रस्तावित संशोधनों के अनेक प्रावधान घातक सिद्ध होंगे। उत्तराखण्ड की वन पंचायतों का इस कानून में कोई भी जिक्र नही है। लोगों के अधिकारों को बिना किसी प्रक्रिया के वन विभाग द्वारा समाप्त करने की बात कही गई।

स्वतन्त्र भारत में जहां वन अधिकार अधिनियम 2006 जैसे अधिनियम वनाश्रितों को वन अधिकार धारक बताते हैं, वहीं ये प्रस्तावित संशोधन उन्हें उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित करने की बात करता है, अंग्रेज सरकार ने भी ऐसा नहीं किया। साथ ही ये संशोधन वन विभाग को इस प्रकार सशक्त करने की बात करता है कि केवल शंका के आधार पर वन आश्रितों को एक वर्ष से अधिक गैर जमानती हिरासत में रखा जा सकता है और वन अधिकारियों के द्वारा क्षति पहुँचाई जा सकती है; ऐसा करने पर इन अधिकारियों पर कार्यवाही भी नहीं की जा सकेगी।

लखनऊ सर्वोदय मंडल का एकदिवसीय उपवास

गांधी जी को अपशब्द कहने वालों तथा झूठ, नफरत व हिंसा की राजनीति के खिलाफ गांधी भवन स्थित गांधी प्रतिमा स्थल पर 19 मई को एकदिवसीय उपवास का आयोजन हुआ। शाम को एक प्रतिरोध सभा के बाद वरिष्ठ अधिवक्ता व लेखक अवतार सिंह बहार व वरिष्ठ चिंतक सी बी सिंह ने उपवास पर बैठे लोगों को जूस पिला कर उपवास समाप्त कराया। प्रतिरोध सभा की अध्यक्षता रामकिशोर ने व संचालन वीरेन्द्र त्रिपाठी ने किया। वक्ताओं ने गांधी जी के जीवन संघर्ष पर विस्तृत प्रकाश डाला।

बैठक के अंत में पारित एक प्रस्ताव में कहा गया कि हम लखनऊ के नागरिक समाज की ओर से गांधी जी के अपमान का विरोध करते है तथा आम जनता से अपील करते है कि वह झूठ नफरत व हिंसा की राजनीति को शिकस्त दे। कार्यक्रम में देवेन्द्र वर्मा, प्रो. जाफरी, रामकृष्ण, डॉ सतीश श्रीवास्तव, रवि उपाध्याय आदि ने भी अपनी बात रखी।

–राम किशोर

उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल कार्यसमिति

सर्वोदय मंडल, उत्तर प्रदेश की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक 2 जून को गांधी भवन में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता सर्वोदय मंडल उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष भगवान सिंह ने किया। बैठक का संचालन सर्वोदय मंडल के पूर्व अध्यक्ष मधुसूदन उपाध्याय ने किया।

बैठक में महात्मा गांधी के विचारों के प्रसार के लिए व्यापक कार्ययोजना बनी। बैठक में तय हुआ कि गांधी -150 अभियान को तेज गति से चलाया जायेगा। यह भी तय हुआ कि गांधी जी के साहित्य को जन-जन तक पहुंचाया जाय जिससे झूठ और नफरत की राजनीति को शिकस्त दी जा सके। **–लाल बहादुर राय**

कर्नाटक सर्वोदय मंडल के कार्यक्रम

कर्नाटक सर्वोदय मंडल ने नेहरू युवा केन्द्र और बंगलोर जिला सर्वोदय मंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में गांधी-150 के सिलसिले में 2 अक्टूबर 2018 से शुरू हुए और 30 जनवरी 2020 तक चलने वाले अपने कार्यक्रमों की घोषणा की है। इस अभियान का समापन 30 जनवरी 2020 को गांधी पुण्य-तिथि के अवसर पर चौथे राज्य स्तरीय सर्वोदय सम्मेलन के साथ होगा। इस बीच पड़ने वाली विभिन्न महत्त्वपूर्ण तिथियों पर विभिन्न स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। बा और बापू पर सौ पृष्ठों की एक पुस्तक प्रकाशित किये जाने की योजना है, जिसे 1500 स्कूलों में मुफ्त वितरित किया जायेगा। किताब के मुफ्त वितरण के लिए कर्नाटक के सभी 30 जिलों से 50-50 स्कूल चुने जायेंगे। यह कार्यक्रम जुलाई 2019 में होगा। 2 अक्टूबर 2019 को विभिन्न विद्यालयों में मौखिक क्विज के कार्यक्रम भी होंगे। **–एल. नरसिम्हैया**

अमेरिका में गांधी-150

अमेरिका के न्यूजर्सी कनवेन्शन एण्ड एक्स्पो सेन्टर में गांधी जन्मोत्सव का 150वां साल उल्लासपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम में आदित्य बिरला ग्रुप और जैन इरीगेशन ने व्यापक भागीदारी की। न्यूजर्सी में आदित्य बिरला ग्रुप का एक डिजिटल म्यूजियम भी है जहां गांधीजी का विशाल चित्र एक सेल्फी प्वाइंट के तौर पर इस उद्देश्य से लगाया गया है कि लोग गांधीजी के चित्र के साथ सेल्फी ले सकें। इस कार्यक्रम के दौरान लगभग 5000 लोगों ने गांधीजी के चित्र के साथ सेल्फी ली।

जैन इरीगेशन गांधी तीर्थ के लोगों ने भी इस कार्यक्रम में शानदार भूमिका निभायी। ये लोग अपनी 16 सदस्यीय टीम के साथ अमेरिका आये थे और 30 हजार वर्ग फुट क्षेत्र में फैले गांधी म्यूजियम के निर्माण में अपना निरंतर और अथक योगदान किया। उनके वालंटियर्स ने पूरे समर्पण भाव और गांधियन स्पिरिट से काम करते हुए अपने असाध्य श्रम और प्रोफेशनल लगन के बूते एक वर्ष के समय में यह म्यूजियम तैयार कर डाला। यह म्यूजियम स्थानीय गांधियन सोसाइटी को सौंप दिया गया है। बिरला ग्रुप ने भी अपना डिजिटल म्यूजियम इसी तरह की एक संस्था को दान कर दिया है।

अब हम गांधी-150 के अपने कार्यक्रमों और अपनी प्रदर्शनियों को लेकर वाशिंगटन, ह्यूस्टन, ओरलांडी, लॉस ऐन्जिल्स, सैन फ्रांसिस्को तथा शिकागो आदि शहरों में जायेंगे और सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी फ्लोरिडा, टेक्सास विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा, एरिसोना स्टेट यूनिवर्सिटी और मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी आदि विश्वविद्यालयों में कार्यक्रम करेंगे। इस तरह पूरे अमेरिका में गांधी दर्शन के प्रसार के निमित्त हमारा सघन अभियान जारी है। **–भद्र बुटाला**

'Sarvodaya Jagat' Hindi Fortnightly
Registered under RNI No. 35495/78, Postal Registration No. VSI-(E) 04, Valid upto 31 December 2020
Issued by S.S.P.O. Varanasi (East Division)

कविताएं

अग्रदूत

❑ 'अंचल'

तुम प्रज्वलित प्रतीक विभा के नवजागृति निर्माता!
महादेश के महाप्राण नवयुग नव सृष्टि विधाता!
टूट गये सदियों के बन्धन जब तुम देव पधारे।
शीतल हुए तुम्हें छूकर अभिशापों के अंगारे।

किसका मस्तक नहीं तुम्हारे चरणों पर नत होता?
किसका गौरव नहीं तुम्हारी चरण-धूलि में सोता?
सदियों से जलती है ऐसी महाक्रांति की ज्वाला।
सदियों में पूरी होती है बलिदानों की माला।

सदियों में आते हैं तुम-से नीलकंठ वरदानी।
सदियों में पूरी होती आजादी की कुर्बानी!
डोल उठीं दुनिया की दीवारें–चट्टानें टूटीं,
प्रतिरोधों का रोष लिए जब युग की किरणें फूटीं।

तुम नूतन बलिपंथ सृजेता! तेजवंत बलदाता!
वज्रप्रहारों, तूफानों में जो रहता मुस्काता।
रुक रुक जाती श्वास दमन की सुन निर्घोष तुम्हारा,
दीप्त तुम्हारी आहुतियों से स्वतंत्रता का तारा।

तुम सदियों की लुटी प्रजा के संघर्षों के सम्बल!
पग पग पर नवजीवन के अध्याय लिख रहे उज्ज्वल!
आशा का उल्लास और आलोक तुम्हारा सहचर,
अविनाशी प्राणों का उद्यत दर्प तुम्हारा अनुचर।

महाकाश की जय-ध्वनि-सी दुर्दम्य तुम्हारी वाणी,
शिशिर-स्निग्ध मुस्कान तुम्हारी ओ साधक! संधानी!
हे प्रबुद्ध! हे मती! राष्ट्र की जनता के सेनानी!
कैसे अर्चन करें तुम्हारा? रुद्ध हमारी वाणी!

महाक्रांति के अग्रदूत! विद्रोह-सैन्य–अधिनायक!
महारुद्र! ओ नीलकंठ! भैरव गीतों के गायक!
फिर इंगित पर चले तुम्हारे विजय लुब्ध जन-गण-मन,
पग चिह्नों पर बढ़े तुम्हारे क्षुब्ध देश का यौवन। ❑

महामानव की जय!

❑ पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

उस दिन बोल उठी अनजाने, नीरव-सी वन की छाया;
जब अनन्त में महाज्योति के सागर-सा कुछ लहराया।
किरण-करों से युग-मन्दिर का खोल किसी ने द्वार दिया?
स्वागत-पथ पर दम्भी-नगपति ने भी हृदय पसार दिया।

चकित विश्व ने कहा महामानव की छाया डोल रही;
हिय-हिय की धड़कन में उसकी मंगल-वाणी बोल रही।
गूंज उठा नभ बार-बार जब युग ने जय-जयकार किया;
पुलक-पुलक युग उठा, धरा ने निज सर्वस जब वार दिया।

तुम चरण अभिवन्दनीय फिर उस मिट्टी की काया के,
श्वास श्वास में गौरव-गर्भित गीत बंधे उस छाया के।
चिनगारी बन उठी कल्पना, प्रण-प्रदीप सुलगाने को;
आत्म-प्रलय का मंत्र फूंक, जागृति की ज्योति जगाने को।

खुली चेतना की आंखें, वाणी की ज्वाला फैल चली;
नभ को हिला, हिला धरणी को, कम्पित कर गिरि शैल चली।
बाधा-बन्धन अपने ही लघु-तम में अन्तर्ध्यान हुए,
अश्रु महामानव के युग-वीणा के मंगल-गान हुए।

पतन–अभ्युदय-पथ के पंथी, कांप रहे वह जाता है,
लपटों में भी मुस्काकर आगे ही पैर बढ़ाता है।
आसपास जो खड़े आंच से, जल जाते घबराते हैं,
किन्तु मरण के सम्मुख भी उसके पग बढ़ते जाते हैं।

युग की सजग चेतना का प्रतिनिधि पौरुष का ज्वार प्रबल,
त्याग और तप का प्रतीक, पीड़ित का कातर प्यार सजल।
मुट्ठी भर हड्डियां जरा-सी मिट्टी हल्की-सी धड़कन,
आत्म-प्रलय की धुन अन्तर में, लेश न होठों पर सिकुड़न।

दृग में शक्ति कि स्वयं रोक ले, अपनी गति से महाप्रलय!
जान हथेली पर, खतरों से प्रेम, महामानव की जय! ❑

गांधी जयंती का 150वां वर्ष केवल भारत में ही नहीं दुनिया के दूसरे देशों में भी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस संदर्भ में सर्वोदय जगत गांधी पर लिखी हुई 150 कविताओं का क्रमवार प्रकाशन करेगा। इस अंक में इन दो कविताओं के साथ यह सिलसिला शुरू हो रहा है। आपके पास भी अगर गांधी पर अच्छी कविताएं हों, तो उन्हें हमारे संपादकीय पते या ई-मेल पर भेजें।
–सं.

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार।